A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 17 दिसंबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-107 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

आप : दिल्ली को बदलने चले केजरीवाल खुद कितना बदले?

जगदीप सिंधु

मेरा तो कलेजा कांप उठता है, यह सोचकर कि जब दिल्ली की 40 प्रतिशत जनता झुग्गियों में रहती है, तब कोई सीएम कैसे ऐसे आलीशान घर में रह सकता है। शीला दीक्षित जी के आधिकारिक आवास में लगे 10 AC के लिए अरविंद केजरीवाल ने कहा था कि कौन भरता है इन सब का बिल? मैं और आप भरते हैं।

6 स्टाफ रोड बंगले की हकीकत अब सब के सामने है। खुद को आम आदमी बताकर कभी बंगला और कार नहीं लेने की बात कहकर सत्ता में आए मुख्यमंत्री केजरीवाल के सरकारी आवास में लगे सामान की सूची सार्वजनिक होते ही इसकी भव्यता जानकर सब हैरान हैं। 9 साल तक केजरीवाल इस बंगले में रहे है। मुख्यमंत्री पद त्यागने के बाद यह बंगला खाली करना पड़ा है ।

अन्ना हजारे आंदोलन के बाद 2 अक्टूबर 2012 में एक नयी राजनीतिक पार्टी बनाने की घोषणा कर नए तरह की राजनीति करने के ख्वाब पुरे देश को भी दिखाए गए थे। परिवारवाद, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता से मुक्त एक पार्टी की कल्पना ने अधिकांश उदार विचारधारा को मानने वाली जनता को अपनी और खींचा और भरपूर समर्थन पाया। जड़ भ्रष्ट अलोकतांत्रिक एकाधिकारवादी राजनीति के विपरीत एक प्रगतिवादी भागीदारी व सुगम कल्याणकारी प्रसाशनिक व्यवस्था आधारित राजनीति को विकल्प के रूप में स्थापित करने के संदेश और लक्ष्य में ढाल कर बनायी आम आदमी पार्टी को केजरीवल ने धीरे-धीरे पूरी तरह से अपनी महत्वाकांक्षा के इर्दगिर्द ही समेट लिया ।

जनता के विश्वास ने 2013 के दिल्ली विधानसभा के पहले ही चुनाव में 29.48 प्रतिशत मत और 70 में से 28 सीट पार्टी की झोली में डाल दिए और आम आदमी पार्टी दूसरी बड़ी पार्टी बन कर उभरी। भाजपा को 33 प्रतिशत मत हासिल कर 31 सीट जीती तो कांग्रेस ने भी 24.6 प्रतिशत मत हासिल किये और 8 सीटों पर सिमट गयी थी। बहुजन समाज पार्टी को 5.35 प्रतिशत ही मत मिल सके थे। कांग्रेस के बाहरी समर्थन से केजरीवाल मुख्यमंत्री बने।

भाजपा ने दिल्ली के चारों और बाहरी क्षेत्रों में सफलता हासिल की थी तो आम आदमी पार्टी ने मध्य दिल्ली के क्षेत्र में अपनी पैठ बनाई। 66 त्न मतदान हुआ था। 2014 के लोकसभा चुनावों में दिल्ली की सातों सीटों पर चुनाव लड़ा 32.9 त्न मत हासिल किये लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। अरविन्द केजरीवाल बनारस से नरेंद्र मोदी के सामने मुकाबले में बुरी तरह मात खा गए।

2015 में एक साल के राष्ट्रपति शासनकाल के बाद हुए चुनाव में कांग्रेस के 15 प्रतिशत वोट भी आम आदमी पार्टी की और चले गए और कांग्रेस के पास केवल 9.7 प्रतिशत ही मत रह गए। दिल्ली की जनता ने 54.3 प्रतिशत के बड़े समर्थन से 67 सीट पार्टी की झोली में डाली। भाजपा को केवल 3 सीट ही मिली, लेकिन उसका मत 32.3 प्रतिशत रहा।

2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में 53.57 प्रतिशत मत आम आदमी पार्टी को मिले लेकिन अबके सीटें कम हो गई। 62 सीटों पर पार्टी ने जीत हासिल की लेकिन भाजपा के मत में लगभग 6.2 प्रतिशत (38.51 प्रतिशत) की बढ़ोतरी से सीटों का ग्राफ बढ़ कर 8 पहुँच गया। 2024 के लोकसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी का मत 2019 के मुकाबले 32.9 प्रतिशत से घट कर 24.17 प्रतिशत आ गया। दिल्ली विधान सभा चुनावों में अबकी बार आम आदमी पार्टी के कई नेता चिंता में घिरे हुए हैं कि कई मुद्दों की वजह से जनता में लोकप्रियता की कमी मत प्रतिशत कितना अंतर डालेगी।

एक दशक बीत जाने के बाद भी पार्टी को पूरी तरह संरचना में नहीं ढाला गया बल्कि पूरा वर्चस्व केवल एक व्यक्ति केंद्रित ही बना हुआ है। राजनीतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए राष्ट्रवाद के समांतर हिंदुत्व की पहचान को निरंतर बनाए रखा गया है। दिल्ली के स्कूल पाठ्यक्रम में देशभक्ति के अध्याय जोड़ने और खुद को हनुमान भक्त घोषित करने के यत्न इसी कड़ी का अंग हैं। विभिन्न सम्प्रदायों को राजनीतिक उद्देश्य के लिए साथ जरूर लिया गया लेकिन धर्मनिरपेक्षता के संवैधानिक सिद्धांत को स्पष्टता से स्थापित करने के लिए गंभीर संघर्ष करने में प्राथमिकता तय नहीं की गई।

आज आम आदमी पार्टी गंभीर चुनौतियों से जूझ रही है। पार्टी के सामने उन्हीं मूल्यों की चुनौतियां हैं जो एक समय में पार्टी के गठन का आधार बने थे। राजनीतिक महत्वाकांक्षा लोगों के प्रति प्रतिबद्धता से आगे निकल गई है और कई वादे अधूरे रह गए हैं। यमुना को स्वच्छ नदी बनाने का वादा किया था, लेकिन ऐसा कभी नहीं कर पाए। यमुना नदी अब पहले से भी अधिक प्रदूषित है। हर साल प्रदूषण के कारण दिल्ली की जनता को जो दंश झेलना पड़ता है उसक कोई स्थाई समाधान केजरीवाल सरकार अभी तक खोज नहीं पायी।

जो बुनियादी सेवाओं को देने का जोर शोर से प्रचार किया गया था अभी तक वैसी बुनियादी सेवाएं दे पाने के स्तर तक नहीं पहुंच पाए। उपराज्यपाल से तकरार और टकराव के चलते दिल्ली के लोगों को बुनियादी सेवाएं प्रदान करने में भी कठिनाई हो रही है। लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने के बजाय केवल अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए लड़ रहे हैं।

केजरीवाल के नए बंगले की भव्यता उजागर होने के बाद और बंगले में हुए स्वाति मालीवाल जैसे कई विवाद,लोक सभा चुनाव में अन्य राज्यों में प्रचार के लिए पंजाब सरकार के हेलीकॉप्टर का उपयोग हैं, जो लोगों को संदेह में डाल रहे हैं कि क्या अब भी केजरीवाल आम आदमी हैं या नहीं। यह साफ है कि अगर दिल्ली सरकार अपना अधिकांश समय केंद्र से लड़ने में लगाती रहेगी तो दिल्ली का कुछ नहीं हो सकता। पंजाब के चुनाव में राज्य की तस्वीर बदलने के लिए एक मौका मांग कर सत्ता में आयी आम आदमी पार्टी की हालत किये गए वादे पूरे नहीं कर पाने के चलते कमजोर ही मानी जाने लगी है।

अपनी राजनीतिक यात्रा दिल्ली के आम लोगों की सेवा करने की प्रतिबद्धता के साथ शुरू करने वाले और ऐसा करना जारी रखने की कसम उठाने वाले केजरीवाल की प्राथमिकताएं बदलते हुए दिल्ली देख रही है। भाजपा सरकार द्वारा प्रताड़ित किये जाने की सहानुभूति के प्रयोग करने की रणनीति पर चुनाव में केजरीवाल अपना दांव मजबूत करने में लगे हैं।

राजनीति में बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए महत्वाकांक्षा के शीशमहल की कोमल चांदनी नहीं बल्कि त्याग की कड़ी धुप में झुलसना होता है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मध्यप्रदेश विधानसभा का पांच दिवसीय शीतकालीन सत्र शुरू

खाद संकट पर कांग्रेस का वॉक आउट सदन में गलत उत्तर, दो पर कार्रवाई

भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश विधानसभा के पांच दिवसीय शीतकालीन सत्र का सोमवार को पहला दिन रहा। प्रश्नकाल के बाद कांग्रेस ने हंगामा करते हुए वॉकआउट कर दिया। शून्यकाल के दौरान नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार ने प्रदेश में खाद संकट पर चर्चा कराने की मांग की जिसमें सत्ता पक्ष के विधायकों ने मामूली हंगामा कियाँ नेता प्रतिपक्ष की मांग को स्पीकारने स्वीकार नहीं किया इस पर कांगेस के विधायकों ने सदन से वॉक आउट कर दिया। ध्यानाकर्षण के बाद सदन की कार्यवाही कल सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। अमरवाड़ा से विधायक कमलेश शाह और बुधनी से विधायक रमाकांत भार्गव के शपथ ग्रहण से विधानसभा की कार्यवाही शुरू हुई।

इस दौरान कांग्रेस विधायकों ने खाद की खाली बोरियां लेकर विरोध प्रदर्शन किया। वे किसानों को खाद नहीं मिलने का मुद्दा उठा रहे थे। इसके बाद कार्यवाही कल तक के लिए स्थगित कर दी गई। इससे पहले प्रश्नकाल में कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह के प्रश्न के जवाब में सरकार ने माना कि सदन में त्रुटिवश गलत जानकारी आ गयी थी राघौगढ कॉलेज में पीजी पाठ्यक्रम अभी संचालित नहीं है।

सदन की कार्यवाही से पहले बुधनी से भाजपा विधायक रमाकांत भार्गव और अमरवाड़ा विधायक कमलेश शाह ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। विजयपुर से निर्वाचित विधायक मुकेश मल्होत्रा सदन में नहीं पहुंचे, इसलिए उनकी विधानसभा सदस्य के रूप में शपथ आज नहीं हो पाई।

पूर्व मंत्री कहा- अशासकीय शैक्षणिक संस्थाओं के नाम पर व्यापार चल रहा- पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने ध्यानाकार्षण प्रस्ताव के जरिए अपनी बात रखी।

शीतकालीन सत्र के पहले दिन यह हुआ

- प्रश्नकाल में केवल दो प्रश्न ही हो पाए। विधायक सुरेश राज्य और विधायक जयवर्धन सिंह ने अपने क्षेत्र में हुए कार्यों को लेकर सवाल किए। इसके बाद प्रश्नकाल खत्म हो गया।
- नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार शून्यकाल में खाद संकट पर बात करना चाहते थे। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बांग्लादेश का मुद्दा उठा दिया, जिस पर कांग्रेस ने कहा- सरकार खाद संकट पर चर्चा ही नहीं करना चाहती। इसके बाद कांग्रेस ने हंगामा करते हुए वॉकआउट कर दिया।
- पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने सागर के माल्थोन के एक स्कूल में बच्चे के यौन शौषण का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में इस तरह की घटनाएं कई स्कूलों में हो रही हैं। अशासकीय शैक्षणिक संस्थाओं के नाम पर व्यापार चल रहा है।
- पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने स्कूल शिक्षा मंत्री से कहा, जो जवाब सदन में दिया जाए उसे चेक कर क्लियर कर लिया करें। ये नहीं कि अफसरों ने जो लिखकर दे दिया मंत्रीजी ने उसे मान लिया। मैं भी विधायक हूं।
- विधानसभा से बाहर निकलने के बाद नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा, भाजपा सरकार के संरक्षण में पूरे प्रदेश में कई लोग नकली खाद बेच रहे हैं। सरकार इसे रोके।

इससे पहले मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष वेतन भत्ता संशोधन और नेता प्रतिपक्ष वेतन भत्ता संशोधन अधिनियम 2024 पुर्नस्थापना विधेयक पेश किया। दोनों ही प्रस्ताव पर अनुमति दी गई। धार्मिक न्यास और धर्मस्व मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने मैहर के मां शारदा देवी मंदिर पुर्नस्थापना संशोधन विधेयक 2024 पेश किया। इस पर भी अनुमति दी गई।

मप्र के हर जिले में पुलिस बैंड की कल्पना पूरी : सीएम

पुलिस की सराहना कर बोले-'स्वर मेघ' कार्यक्रम में आज अद्भुत प्रस्तुति हुई

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे सभागार परिसर में सोमवार को पुलिस बैंड की विशेष प्रस्तुति का आयोजन किया गया। पुलिस बैंड ने अपनी अद्वितीय धुनों और लयबद्ध प्रदर्शन से मनमोहक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री मोहन यादव शामिल हुए। उन्होंने पुलिस बैंड की प्रस्तुति पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि हर जिले में पुलिस बैंड है। फील्ड में अच्छा काम करने वाले अधिकारियों को इनाम का प्रावधान है। इसमें और बढ़ावा देने की जरूरत है। इस पर काम किया जा रहा है। इस दौरान सीएम ने कोविड काल को याद कर पुलिस के योगदान की सराहना की। बैंड वादकों को 10 हजार रुपए प्रति व्यक्ति को देने की भी घोषणा की।

हर जिले में पुलिस बैंड की थी कल्पना

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'स्वर मेघ' कार्यक्रम में आज अद्भुत प्रस्तुति हुई है। पुलिस कर्मियों ने देशभक्ति-जनसेवा के ध्येय वाक्य को अपनी आत्मा में उतारकर दिन-रात सुरक्षा और सेवा में लीन रहने का कार्य किया है। इसके लिए मध्यप्रदेश के सभी पुलिसकर्मियों को मैं सैल्यूट करता हूं और बधाई देता हूं। धीरे-धीरे हमारे सभी जिलों के पुलिस बैंड का गठन किया जाए। प्रत्येक जिले में पुलिस बैंड की स्थापना बहुत कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन पुलिस की इच्छाशक्ति से यह कार्य सफल हुआ है।

आजादी के बाद हर जिले में था पुलिस बैंड

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आजादी के समय में अधिकांश जिलों में पुलिस बैंड हुआ करता था, लेकिन जैसे-जैसे पुलिसकर्मी रिटायर हुए, वैसे-वैसे पुलिस बैंड का अभाव बढ़ता गया। यह हमारे लिए चुनौती का विषय था। हमने यह प्रयास किया कि 15 अगस्त 2024 तक हमारे हर जिले में पुलिस बैंड प्रस्तुति दे। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि पुलिस ने उस चुनौती को पूर्ण किया और इसके परिणामस्वरूप इस बार हर जिले में स्वतंत्रता दिवस पर पुलिस बैंड की प्रस्तुति दी।

सुप्रभात

जब कभी चाहो मुझे ढूंढना
तो ढूंढना उदास सी शाम में
जब ढलता हो सूरज और
गहराती हो लालिमा और
लौट रहे हों पंछी अपने घरों को
जब कभी चाहो मुझे ढूंढना
तो ढूंढना समुंदर के साहिलों पर
उठती-गिरती लहरों साथ
जो बेबस लौट जाती हैं, बार-बार
जब कभी चाहो मुझे ढूंढना
तो ढूंढना मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ
दूर क्षितिज को ताकते
जहां आलिंगनबद्ध होते हैं
धरती और गगन
जब कभी चाहो मुझे ढूंढना
तो मैं मिलूंगी,
पतझड़ में झड़ते पत्तों संग
भीगती हुई बारिशों संग
कांस के रुओं की तरह
सेमल की रुई की तरह
उड़ती हुई
और आ आ कर तेरी शर्ट से
चिपकती हुई
गर कभी तुम चाहो मुझे ढूंढना।

- निरुपमा खरे

संसद का शीतकालीन सत्र नहीं थम रहा हंगामा

● वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बीच जमकर तकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा में सोमवार को संविधान पर चर्चा के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बीच जमकर तकरार हुआ। वित्त मंत्री ने कहा- कांग्रेस पार्टी परिवार और वंशवाद की मदद करने के लिए बेशर्मी से संविधान में संशोधन करती रही। ये सत्ता में बैठे लोगों की रक्षा के लिए किया गया था।

इस पर खड़गे ने कहा, जो लोग तिरंगे, अशोक चक्र और संविधान से नफरत करते थे, वे आज शिक्षा दे रहे हैं। जब संविधान बना, तो इन लोगों ने इसे जला दिया था। जिस दिन संविधान अपनाया गया था,

इन्होंने रामलीला मैदान दिल्ली में बाबासाहेब अंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी के पुतले जलाए थे। आरएसएस के नेता संविधान का विरोध इसलिए करते हैं क्योंकि यह मनुस्मृति पर आधारित नहीं है।

वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा

- कांग्रेस जीएसटी को 'गब्बर सिंह टैक्स' कहती है। धनखड़ ने कहा, 'क्या होगा अगर कोई गब्बर सिंह आकर कहे कि मुझे बदनाम किया गया है।'
- कांग्रेस ने दशकों तक पुराने संसद भवन के मध्य में बाबासाहेब अंबेडकर की तस्वीर नहीं लगने दी, उन्हें भारत रत्न से वंचित रखा गया।
- मजरूह सुल्तानपुरी और बलराज साहनी दोनों को 1949 में जेल भेजा गया था। क्योंकि इन लोगों ने नेहरू के खिलाफ कविता सुनाई थी।

पीएम म्यूजियम का राहुल को लेटर- नेहरू के डॉक्यूमेंट्स लौटाएं

इसमें एडविना, जेपी, आइंस्टाइन को लिखी चिट्ठियां, 2008 में सोनिया ने म्यूजियम से मंगवाए थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम म्यूजियम की ओर से नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को लेटर लिखा गया है, जिसमें उनसे नेहरू से जुड़े डॉक्यूमेंट्स वापस करने की मांग की गई है।

प्रधानमंत्री म्यूजियम और लाइब्रेरी सोसाइटी के सदस्य रिजवान कादरी ने सोमवार को कहा कि 2008 में पीए कार्यकाल में 51 बक्सों में भरकर नेहरू के पर्सनल लेटर सोनिया गांधी के पास पहुंचाए गए थे। या तो सभी लेटर वापस किए जाएं, या फिर इन्हें स्कैन करने की इजाजत दी जाए, क्योंकि ये डॉक्यूमेंट्स पहले ही पीएम म्यूजियम का हिस्सा थे।

रिजवान ने कहा- सितंबर 2024 में भी मैंने सोनिया गांधी को लेटर

लौटाने के लिए पत्र लिखा था, लेकिन उनसे कोई जवाब नहीं मिलने पर मैंने अब राहुल को पत्र लिखा है। राहुल गांधी को रिजवान ने 10 दिसंबर को लेटर लिखा था। हालांकि, इसकी जानकारी अब सामने आई है।

रिजवान ने जिन 51 बक्सों की बात कर रहे हैं, उनमें नेहरू के वे लेटर रखे हुए हैं, जो उन्होंने एडविना माउंटबेटन, अल्बर्ट आइंस्टाइन, जयप्रकाश नारायण, पद्मजा नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली, बाबू जगजीवन राम और गोविंद बल्लभ पंत को लिखे थे।

● **भाजपा बोली- ऐसा क्या था, जो गांधी परिवार देश को नहीं बताना चाहता-** भाजपा सांसद संबित पात्रा ने कहा कि उन लेटर में ऐसा क्या लिखा था, जो गांधी परिवार नहीं चाहता कि वे बातें देश के सामने आएं।

इस स्मारक में शुरू में सिर्फ नेहरू के ऐतिहासिक डॉक्यूमेंट्स ही मौजूद थे, जिनमें नेहरू के वर्ल्ड लीडर्स को लिखे लेटर शामिल थे। बाद में पता चला कि 51 बक्से ऐसे भी थे, जिनमें नेहरू के एडविना माउंटबेटन, जेपी नारायण और कई अन्य नेताओं को लिखे गए पत्र थे। अब सवाल यह है कि क्या विपक्ष के नेता के तौर पर राहुल वाकई सोनिया गांधी से बात करेंगे कि वे इन पत्रों को देश को वापस लौटा दें।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 18°c
न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 17 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

फ्रांस के मायोट में 100 साल में सबसे बड़ा तूफान

1000 से ज्यादा लोगों के मारे जाने की आशंका; लोग बोले- ये परमाणु बम जैसा

पेरिस (एजेंसी)। हिंद महासागर के द्वीप मायोट में आए एक चक्रवात 'चिडो' ने भारी तबाही मचाई है। सीएनए के मुताबिक चक्रवात के दौरान 225 किमी/घंटा की रफ्तार से हवाएं चलीं, जिसकी वजह से दर्जनों बस्तियां पूरी तरह से बर्बाद हो गईं।

चिडो को मायोट में पिछले 100 सालों में आया सबसे

भीषण तूफान बताया जा रहा है। ऐसी आशंका है कि कम से कम 1,000 लोग मारे गए हैं। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि होना बाकी है। इस तूफान ने इतनी तबाही मचाई है कि लोग इसकी तुलना परमाणु बम से कर रहे हैं।

मायोट अफ्रीका के पूर्वी तट से दूर हिंद महासागर में, मेडागास्कर के ठीक पश्चिम में स्थित है। इस पर फ्रांस का कब्जा है।

लेवल-4 का तूफान, मेडागास्कर से मोजाम्बिक तक तबाही मचाई- फ्रांस के मौसम विभाग के मुताबिक चिडो लेवल-4 का तूफान था जो शनिवार-रविवार को दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर से गुजरा था। पहले इसने मेडागास्कर में तबाही मचाई लेकिन सबसे ज्यादा असर मायोट में पड़ा। इसके बाद यह मोजाम्बिक की तरफ बढ़ गया। फिलहाल तूफान कमजोर पड़ गया है। मायोट के अधिकारियों ने कहा कि चक्रवात से बुनियादी ढांचे को काफी नुकसान पहुंचा है। बिजली व्यवस्था ठप हो गई है। सड़कें टूट गई हैं। इससे लोगों को काफी परेशानी हो रही है।

भीषण सड़क हादसा

ट्रक ने एसयूवी को मारी टक्कर, 6 की मौत, 7 घायल

7 सीटर में 13 सवार..., मरने वालों में 1 बच्चा, 4 महिलाएं भी

बालोद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले के भानुप्रतापपुर-दल्लीराजहरा मार्ग पर आज (सोमवार) सुबह भीषण सड़क हादसे में 6 लोगों की मौत हो गई। वहीं 7 अन्य गंभीर रूप से घायल हैं। मरने वालों में एक बच्चा, 4 महिलाएं और एक पुरुष शामिल हैं। तेज रफ्तार ट्रक ने कार को टक्कर मारी है। मामला डौंडी थाना क्षेत्र के चौरापावड़ के पास का है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) अशोक जोशी के मुताबिक घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से राजनांदगांव मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। आरोपी ट्रक चालक फरार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। जानकारी के मुताबिक जायलो (एसयूवी) में 13 लोग बैठे थे, जिनमें 2 बच्चे भी शामिल थे। वे डौंडी से गुरेदा लौट रहे थे, तभी हादसे का शिकार हो गए।

संक्षिप्त समाचार

प्रियंका फिलिस्तीन के सपोर्ट वाला बैग लेकर संसद पहुंचीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी सोमवार को संसद में फिलिस्तीन के समर्थन वाला एक बैग लेकर पहुंची। इस पर लिखा है– 'फिलिस्तीन आजाद होगा।' हैंड बैग पर शांति का प्रतीक सफेद कबूतर और तरबूज भी बना था। इसे फिलिस्तीनी एकजुटता का प्रतीक माना जाता है।

इससे पहले जून 2024 में भी प्रियंका ने इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की आलोचना की थी। तब प्रियंका की टिप्पणी नेतन्याहू के अमेरिकी कांग्रेस को दिए भाषण में गाजा में चल रहे युद्ध का बचाव करने के बाद आई थी। तब उन्होंने कहा था कि गाजा में इजराइल सरकार ने क्रूरतापूर्वक नरसंहार किया है।

योगी बोले-संभल में 1947 से अब तक 209 हिंदुओं की हत्या

किसी ने दो शब्द नहीं कहे

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन सीएम योगी ने कहा– संभल में 1947 से अब तक हुए दंगों में 209 हिंदू मारे गए हैं। किसी ने एक बार भी उन निर्दोष लोगों के लिए संवेदना व्यक्त नहीं की। ये लोग हाल ही में हुए संभल दंगे पर आंसू बहा रहे हैं। ये लोग सौहार्द की बात कर करते हैं। शर्म आनी चाहिए।भारत में राम–कृष्ण और बुद्ध की परंपरा रहेगी। बाबर और औरगंजेब की नहीं रहेगी। योगी ने कहा मुस्लिम समाज का जुलूस मंदिर के सामने से निकल जाता है। कोई समस्या नहीं होती है। हिंदू समाज की शोभायात्रा मस्जिद के सामने से निकलती है तो दिक्कत क्यों होती है?

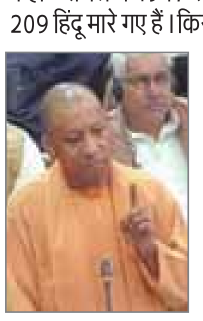

पीएम मोदी से मिले श्रीलंका के राष्ट्रपति

गार्ड ऑफ ऑनर से स्वागत

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके ने सोमवार को दिल्ली के हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान उनका गार्ड ऑफ ऑनर से स्वागत किया गया। राष्ट्रपति बनने के बाद दिसानायके की यह पहली विदेश यात्रा है। वो 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक भारत की

राजकीय यात्रा पर हैं।

दिसानायके के साथ जॉइंट स्टेटमेंट में पीएम मोदी ने कहा कि मैं श्रीलंका के राष्ट्रपति का भारत में स्वागत करता हूं। मुझे खुशी है कि राष्ट्रपति बनने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए उन्होंने भारत को चुना है। इस यात्रा से दोनों देशों के रिश्तों में नई ऊर्जा का सृजन हो रहा है। हमने अपनी साझेदारी के लिए एक फ्यूचरिस्टिक विजन अपनाया है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बजट पूर्व हितधारकों से किया परामर्श

प्राप्त सुझावों का गंभीरता से अध्ययन कर वित्त मंत्री को कराएंगे अवगत

- किसानों के साथ ही कृषि उद्यमियों, अन्य हितधारकों ने दिए विभिन्न सुझाव
- कृषि क्षेत्र से जुड़े सभी पक्षों से सतत संवाद करते रहेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज कृषि भवन, नई दिल्ली में बजट पूर्व हितधारकों से विस्तृत परामर्श किया। इस दौरान किसानों के साथ ही कृषि उद्यमियों, कृषि से जुड़े विभिन्न संगठनों, कृषक उत्पादक संघ तथा अन्य हितधारकों ने विभिन्न महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक में केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सभी प्राप्त सुझावों का हम गंभीरता से अध्ययन कर वित्त मंत्री जी को अवगत कराएंगे। साथ ही श्री शिवराज सिंह ने कहा कि कृषि क्षेत्र से जुड़े सभी पक्षों से हम लगातार संवाद करते रहेंगे।

बैठक में केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय आंतरिक रूप से भी गहन अध्ययन कर रहा है ताकि बजट के संबंध में अपने प्रस्ताव वित्त मंत्रालय को शीघ्र दिए जा सकें। श्री चौहान ने कहा कि विभिन्न पुरानी योजनाओं की समीक्षा भी की जा रही है। आज जिन किसानों तथा सरकारी और निजी अन्य संस्थाओं के साथ ही विभिन्न हितधारकों ने जो सुझाव दिए

हैं, वे महत्वपूर्ण है क्योंकि ये लोग फील्ड में काम करते हुए अपने अनुभव प्राप्त करते हैं, जो खेती-किसानी के फायदे के लिए उपयोगी होते हैं।

इन लोगों से कृषि क्षेत्र में वैल्यू एडिशन, कृषि उपज के निर्यातकों के लिए सुविधाएं बढ़ाने, कृषि अनुसंधान का विस्तार करने, कृषि आदानों की कीमत पर नियंत्रण एवं गुणवत्ता, किसानों को नुकसान नहीं होने आदि के संबध में अनेक सुझाव प्राप्त हुए हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की 109 नई किस्में देश को समर्पित की थी, इसी तरह से किसानों के हित में और क्या-क्या कार्य किए जा सकते है, इस पर अध्ययन-मनन किया जा रहा है। श्री चौहान ने कहा कि उनके मुख्यमंत्री रहते हुए मध्य प्रदेश में भी किसान पंचायत जैसे आयोजन करके सुझाव लिए जाते थे, इससे कृषि व किसानों को लाभ होता है। बैठक में केंद्रीय कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी के साथ ही कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय एवं आईसीएआर के वरिष्ठ अधिकारी तथा नाबार्ड, सीआईआई, पीएचडी चेम्बर आफ कामर्स, एसोचैम, भारतीय स्टेट बैंक, सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन आफ इंडिया सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी और प्रतिनिधि उपस्थित थे।

भारतीय जनता पार्टी विधायक दल की बैठक सोमवार को श्यामला हिल्स स्थित मुख्यमंत्री निवास में संपन्न हुई। बैठक को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने संबोधित किया। बैठक का संचालन विधायक दल के मुख्य सचेतक व प्रदेश शासन के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने किया। बैठक में प्रदेश शासन के उप मुख्यमंत्री, मंत्री एवं विधायक उपस्थित थे।

उस्ताद जाकिर हुसैन का निधन

73 साल की उम्र में सैन फ्रांसिस्को में ली अंतिम सांस

सैन फ्रांसिस्को/नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्वविख्यात तबला वादक और पद्म विभूषण उस्ताद जाकिर हुसैन का निधन हो गया है। उनके निधन की खबर रविवार रात से आ रही थी, लेकिन सोमवार सुबह परिवार ने इसकी पुष्टि की। वे इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस से जूझ रहे थे और दो हफ्ते से सैन फ्रांसिस्को के अस्पताल में भर्ती थे।

रविवार देर रात निधन की अफवाह उड़ी थी- रविवार देर रात भी उनके निधन की खबर आई थी। भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने भी निधन संबंधी पोस्ट शेयर की थी, लेकिन बाद में इसे हटा लिया गया था। इसके बाद जाकिर की बहन और भांजे आमिर ने जाकिर के निधन की खबर को गलत बताया था।

उस्ताद जाकिर हुसैन को 2023 में पद्म विभूषण सम्मान मिला- उस्ताद जाकिर हुसैन को 1988 में पद्मश्री, 2002 में पद्म भूषण और 2023 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। उन्हें 2009 में पहला ग्रैमी अवॉर्ड मिला था। 2024 में उन्होंने 3 अलग-अलग एल्बम के लिए 3 ग्रैमी भी जीते।

याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने पूछा सवाल

'मस्जिद के अंदर जय श्री राम का नारा लगाना अपराध कैसे'

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक मामले की सुनवाई करते हुए याचिकाकर्ता से पूछा कि 'जय श्री राम' का नारा लगाना कैसे अपराध है। मीडिया सूत्रों के अनुसार सुप्रीम कोर्ट में कर्नाटक हाई कोर्ट के उस आदेश को चुनौती देते हुए याचिका दाखिल की गई थी, जिसमें मस्जिद के अंदर कथित तौर पर 'जय श्री राम' का नारा लगाने के आरोप में दो लोगों के खिलाफ कार्यवाही रद्द करने का आदेश दिया गया था।

शिकायतकर्ता हैदर अली सी एम द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस पंकज मिथल और संदीप मेहता की पीठ ने पूछा, 'वे एक खास धार्मिक नारा या नाम चिल्ला रहे थे। यह कैसे अपराध है?' शीर्ष अदालत ने शिकायतकर्ता से यह भी पूछा कि कथित तौर पर मस्जिद के अंदर नारा लगाने वाले लोगों की पहचान कैसे की गई।

देश में सर्दी ढा रही है सितम

- जम्मू-कश्मीर के बारामूला में झरना जमा
- म.प्र.के शहडोल में पारा 1 डिग्री, अयोध्या में 2.5 डिग्री, कानपुर में 4.5 डिग्री के साथ 13 साल का रिकॉर्ड टूटा, राजस्थान में पत्तों पर बर्फ जमी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी के कारण देश के उत्तरी राज्यों में सर्दी तेज होती जा रही है। मध्य प्रदेश में 7 दिनों से शीतलहर चल रही है। सोमवार को भोपाल, जबलपुर समेत 37 जिलों में कोल्ड वेव का अलर्ट है। शहडोल में तापमान 1.0 डिग्री पहुंच चुका है।

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में पारा 2.5 डिग्री पहुंच चुका है। कानपुर में 13 साल बाद न्यूनतम तापमान 4.5 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। यहां 2011 में 15 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 4.7 डिग्री दर्ज हुआ था।

राजस्थान में अगले चार दिन कड़ाके की ठंड पड़ने का अनुमान है। सीजन में पहली बार शीतलहर का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। फतेहपुर (सीकर) में तापमान माइनस में रिकॉर्ड किया गया। माउंट आबू में पत्तों पर बर्फ जम गई है।

मौसम विभाग ने बिहार-हरियाणा समेत 14 राज्यों में कोल्ड वेव का अलर्ट जारी किया है। पंजाब और म.प्र.में सीवियर कोल्ड वेव की चेतावनी जारी की गई है। माउंट आबू में तेज सर्दी पड़ रही है। यहां घर के बाहर रखे बर्तनों में पानी जमने लगा है। अजमेर में गाड़ियों पर बर्फ जम गई। यहां पत्तों पर भी ओस की जमी हुई बूंदें देखने को मिली। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में सुबह 7 बजे कोहरे के कारण विजिबिलिटी 50 मीटर रह गई।

'दिखाओ कैसे हैक किया जा सकता है'

ईवीएम के मुद्दे पर बंटा विपक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम के मुद्दे पर विपक्षी पार्टियां आपस में ही बंटी नजर आ रही हैं। एक ओर जहां कांग्रेस समेत कुछ विपक्षी पार्टियां लगातार ईवीएम पर सवाल उठाती रही हैं तो वहीं आईएनडीआई गठबंधन में शामिल टीएमसी ने इस मुद्दे पर असहमति जताई है। तृणमूल कांग्रेस के सांसद और पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने इस मुद्दे पर आरोपों को केवल बिना सोचा समझा बयान करार दिया। साथ ही मांग की कि ऐसे आरोप लगाने वालों को साबित करके दिखाना चाहिए कि ईवीएम को कैसे हैक किया जा सकता है। अभिषेक ने कहा, ईवीएम पर सवाल उठाने वाले लोगों के पास अगर कुछ है तो उन्हें चुनाव आयोग को डेमो दिखाना चाहिए।

नर्मदापुरम में टाइगर की मौत का खुलासा

शिकारियों के फैलाए करंट से हुई थी मौत

नाबालिग समेत 3 शिकारी अरेस्ट, चौकीदार बर्खास्त और वनरक्षक सस्पेंड

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम जिले के बानापुरा रेंज के बांसपानी के जंगल में टाइगर का शिकार करने वाले 3 शिकारियों को टाइगर स्ट्राइक फोर्स और वन विभाग की टीम ने पकड़ लिया। शिकार के तीनों आरोपी बांसपानी गांव के रहने वाले है। जिनमें एक नाबालिग है। आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि टाइगर की मौत बिजली के करंट से हुई थी। मामले में एक चौकीदार को नौकरी से हटाने और वनरक्षक को सस्पेंड करने निर्देश सीसीएफ अशोक कुमार चौहान ने नर्मदापुरम डीएफओ को दिए है।

आरोपियों ने बताया कि 3 दिसंबर को जंगली सूअर के शिकार के लिए फंदा लगाया था, लेकिन उसमें टाइगर चपेट में आ गया। करंट होने से उसकी मौत हो गई। तीनों ने टाइगर के शव को घसीटकर झाड़ियों में छिपा दिया था। इसके बाद वे गांव में चले गए।

टाइगर स्ट्राइक फोर्स और वन विभाग की टीम ने खोजबीन के बाद बांसपानी से

एक नाबालिग और दो बालिग आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा कि टाइगर की मौत फंदे में बिजली के करंट लगने से हुई थी। वन विभाग की टीम ने शिकारियों के पास से तार और फंदा लगाने की खूंटिया जब्त कर ली गई हैं। अपराध में शामिल अन्य आरोपियों की भी टीम तलाश कर रही है। तीनों आरोपियों को आज सिवनी मालवा में कोर्ट पेश किया गया है। जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है।

दिल्ली में फिर से ग्रेप-3 प्रतिबंध लागू

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में सोमवार को ग्रेप–3 (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) प्रतिबंध फिर से लागू कर दिए गए। एनसीआर इलाकों में भी ये प्रतिबंध लागू होंगे। दोपहर करीब 2.30 बजे शहर का एक्यूआई 366 रिकॉर्ड होने के बाद कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट ने ये फैसला किया। एक्यूआई का यह लेवल हवा की बहुत खराब श्रेणी को दिखाता है।

अखिलेश यादव ने अरविंद केजरीवाल को दिया समर्थन

नईदिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी (सपा) उम्मीदवार नहीं उतारेगी। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दिल्ली में आप को बिना शर्त समर्थन देने की बात कही है। आम आदमी पार्टी सभी 70 सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित कर चुकी है।

सांसद आलोक शर्मा ने लोकसभा में उठाया भोपाल का गौरवशाली इतिहास

राजा भोज शोध संस्थान बने, लोगों को उस दौर की समृद्ध संस्कृति, सभ्यता और परंपरा की जानकारी हो

नईदिल्ली। सांसद आलोक शर्मा एक बार फिर भोपाल शहर को लेकर संसद में मुखर हुए। सोमवार को लोकसभा में शून्यकाल के दौरान उन्होंने भोपाल में राजा भोज शोध संस्थान बनाए जाने का मामला प्रमुखता से उठाया। सांसद शर्मा ने कहा कि भोपाल का एक हजार साल का गौरवशाली इतिहास रहा है। यहां की समृद्ध संस्कृति, सभ्यता और परंपराएं अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने लोकसभा स्पीकर के माध्यम से संस्कृति मंत्री से पूछा कि सरकार की राष्ट्रीय संस्कृति निधि के अंतर्गत भोपाल में राजभोज के नाम पर शोध संस्थान बनाने का विचार है? यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है? और यदि नहीं, तो राजा भोज के नाम पर कब तक भोपाल में शोध संस्थान स्थापित किया जाएगा। सांसद शर्मा ने लोकसभा स्पीकर से निवेदन किया कि भोपाल की गौरवशाली संस्कृति है। हमारा भोपाल राजा भोज का भोपाल है। हमारा भोपाल सम्राट अशोक का भोपाल है। हमारा भोपाल चंद्रगुप्त मौर्य का भोपाल है। हमारा भोपाल प्रत्यारवंशों का भोपाल है। हमारा भोपाल रानी कमलापति, गोंडों का भोपाल है भोपाल की वास्तविक विरासत को विश्व पटेल पर लाने हेतु सरकार की कोई कार्य योजना है कृपया बताने की कृपा करें।

उल्लेखनीय है कि सांसद आलोक शर्मा पूर्व में भी विभिन्न मंचों से भोपाल की विरासत को संरक्षित करने और राजा भोज व रानी कमलापति के कालखंड के समृद्ध इतिहास को लेकर मामला उठाते रहे हैं। राजा भोज द्वारा बनवाया गया बड़ा तालाब शहर की जीवन रेखा है। तालाबों का संरक्षण हो। यहां राजा भोज की विशाल प्रतिमा लगाई गई है। वहीं जिस स्थान पर रानी कमलापति ने अपनी अस्मिता और सम्मान की रक्षा के लिए जौहर किया था। छोटे तालाब के उस स्थान पर आलोक शर्मा ने भोपाल महापौर रहते ही रानी कमलापति की विशाल प्रतिमा की स्थापना के साथ खूबसूरत आर्च ब्रिज का निर्माण कराया था। संभावनाओं की राजधानी भोपाल राजा भोज और रानी कमलापति का शहर है। इसकी ऐतिहासिक और सामाजिक पहचान है। यह शहर विरासतों को संरक्षित करते हुए नवाचार, प्रगति और अवसरों का केंद्र बनने का सपना देखता है।

टीबी को हराने और देश को जिताने में लगाएं पूरी शक्ति और जोश : राज्यपाल पटेल

राज्यपाल द्वारा 75वें टी.बी. सील का विमोचन

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि टी.बी. को हराने और देश को जिताने के लिए भरपूर जोश और शक्ति के साथ कार्य करना होगा। उन्होंने टी.बी. उन्मूलन अभियान में योगदान के लिए नागरिकों से अपील की है। उन्होंने कहा है कि निक्षय मित्र योजनाओं में पांच सौ, हजार रुपए का योगदान किसी के प्राणों की रक्षा कर सकता है। जनता के प्राणों की रक्षा के उद्देश्य के भाव के साथ टी.बी. सील अभियान में सहयोग करें।

राज्यपाल श्री पटेल आज क्षय भवन में आयोजित 75वें टी.बी. सील विमोचन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर 75वीं टी.बी. सील का विमोचन किया। प्रतीकात्मक रुप से टी.बी. के 5 रोगियों को फूड-बास्केट प्रदान की। टी.बी. चैम्पियन और दो निक्षय मित्रों का सम्मान किया। राज्यपाल का कार्यक्रम में शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया। विमोचन कार्यक्रम में मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री मनोहर ममतानी भी उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि टी.बी. के बारे में जानकारियों का प्रसार रोग उन्मूलन की प्राथमिक आवश्यकता है। उन्होंने सूदूर अंचलों और वंचित क्षेत्रों में टी.बी. रोग के बारे में जन जागरण के प्रयासों पर बल दिया है। कहा है कि सामुदायिक स्तर पर संवाद कायम किया जाए। रोग के लक्षणों से हर घर को परिचित कराए। बताए कि रोग को छिपाना जानलेवा होगा। रोग की शीघ्र जांच, नियमित दवाइयों का सेवन और विटामिन युक्त पोषण आहार से गम्भीर से गम्भीर टी.बी. रोगी स्वस्थ हो सकता है। उन्होंने कहा कि टी.बी. रोगियों के साथ ही रोग बचाव के संबंध में परिजनों और परिचारकों को भी सूचित किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि रोग उपचार के साथ रोग बचाव पर भी ध्यान केन्द्रित करने की जरुरत है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि उज्वला गैस योजना श्री मोदी के जनजातीय क्षेत्रों के भ्रमण के अनुभवों से टी.बी. रोग उन्मूलन की पहल है। उन्होंने बताया कि एक समय के भोजन के लिए रसोई के चूल्हें से निकलने वाला धुआँ 60 सिगरेटों के धुंए के बराबर घातक होता। इस धुंए से माताओं, बहनों को बचाने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने उज्ज्वला योजना की परिकल्पना की थी।

कार्यक्रम में अध्यक्ष, नगर निगम भोपाल श्री किशन सूर्यवंशी ने अध्यक्ष निधि से टी.बी. चिकित्सालय के पेवलिंग का कार्य कराने आश्वासन दिया। एसोसिएशन को 1 लाख रुपए के अनुदान दिलाने की बात भी कहीं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के पहले शिक्षा और स्वास्थ्य बातों का विषय होते थे। केन्द्र सरकार ने आयुष्मान कार्ड बनाकर, इसे सरकार का काम बना दिया है। आज सरकार समाज के वरिष्ठ नागरिकों को शारीरिक, मानसिक रुप से स्वस्थ एवं खुशहाल रखने के लिए 70 वर्ष की आयु से अधिक के सभी बुजुर्गों को आयुष्मान कार्ड दे रही है।

टी.बी. एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री जयपाल सचदेव ने बताया कि एसोसिएशन राष्ट्रीय संगठन की इकाई है। संस्था चिकित्सकों के माध्यम से स्कूली बच्चों, नागरिकों को टी.बी. के लक्षण, उपचार सेवाओं, सुविधाओं के संबंध में जन जागरण का कार्य करती है।

एसोसिएशन के मानसेवी सचिव डॉ. मनोज वर्मा ने संस्था का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। बताया कि संस्था पूर्णतः जन सहयोग से संचालित है। संस्था ने शासन से किसी भी प्रकार का अनुदान नहीं प्राप्त किया है। एसोसिएशन के मानसेवी कोषाध्यक्ष डॉ. अभिजीत देशमुख ने सभी उपस्थित अतिथियों का आभार ज्ञापित किया। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री मोदी की संवेदनशीलता और दूरदर्शिता का आभार माना।

मुख्यमंत्री से बीड़ी उद्योग संघ के प्रतिनिधि मंडल ने की भेंट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मध्यप्रदेश बीड़ी उद्योग संघ के प्रतिनिधि मंडल ने भेंट कर बीड़ी उद्योग में रोजगार के अवसरों और अनुपालक बीड़ी निर्माताओं को प्रोत्साहित करने संबंधी विषयों पर चर्चा की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को विधानसभा स्थित मुख्यमंत्री कक्ष में बीड़ी उद्योग संघ के सचिव श्री अर्जुन खन्ना के नेतृत्व में मिले

प्रतिनिधि मंडल ने बताया कि बीड़ी निर्माण एक ऐसा पूर्णतः श्रम आधारित कुटीर ग्रामोद्योग है, जिसमें न्यूनतम पूंजी या बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। संघ ने प्रदेश के उच्च गुणवत्ता और श्रेणी के तेंदूपत्ते से बीड़ी उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता को बढ़ाने संबंधी सुझाव रखते हुए प्रति मानक बोरी तेंदूपत्ता पर सब्सिड़ी बढ़ाने का अनुरोध किया। संघ के प्रतिनिधियों ने कहा कि उत्पादन आधारित प्रोत्साहन के माध्यम से प्रदेश को संगठित और विनियमित बीड़ी उत्पादन के केन्द्र के रूप में सुदृढ़ किया जा सकता है। इससे रोजगार के अधिक अवसर सृजित करने में भी मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार मध्यप्रदेश बीड़ी उद्योग संघ के सुझावों को क्रियान्वित करने का हरसंभव प्रयास करेगी।

सीएम ने विजय दिवस पर सैनिकों-नागरिकों को दीं शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय सैनिकों के शौर्य एवं पराक्रम को समर्पित विजय दिवस पर देश के सैनिकों और नागरिकों को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि वर्ष 1971 में आज ही के दिन हमारे देश के पराक्रमी और साहसी सैनिक जवानों ने पाकिस्तान को घुटनों के बल बैठने को मजबूर कर दिया था और उनके 93 हजार सैनिकों को समर्पण करना पड़ा था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शौर्य का परिचय देते हुए मां भारती के स्वाभिमान और सम्मान को विश्व पटल पर गौरवान्वित करने वाले सैनिक राष्ट्र का गौरव होते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वर्ष 1971 के युद्ध में शहीद सैनिकों को सादर श्रद्धांजलि अर्पित की है । वर्ष 1971 में भारत और बांग्लादेश की संयुक्त सेना ने पाकिस्तान को पराजित किया। इसके बाद पूर्वी पाकिस्तान स्वतंत्र हो गया, जो बांग्लादेश के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध भारत के लिए ऐतिहासिक और हर देशवासी के हृदय में उमंग उत्पन्न करने वाला साबित हुआ।

जब जाकिर हुसैन ने तबले पर सुनाई घुंघरू-डमरू-ट्रेन की आवाज

5 साल पहले भोपाल आए थे उस्ताद; कहा था-कुछ गलत बजाऊं तो ताली बजा देना

भोपाल (एजेंसी)। प्रख्यात तबला वादक और पद्म विभूषण उस्ताद जाकिर हुसैन अब भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनसे जुड़ी यादें हमेशा ताजा रहेंगी। मध्यप्रदेश से भी उनकी कुछ यादें जुड़ी हैं। उस्ताद जाकिर हुसैन 2 मार्च 2019 को भोपाल आए थे। उन्होंने भारत भवन के मुक्ताकाश मंच पर परफॉर्मेंस दी थी।

इस दौरान उन्होंने कहा था- कुछ तालियां बचाकर रखो। कुछ गलत बजाऊं तो ताली बजा देना। भारत भवन विश्व विख्यात

कला का केंद्र है। ऐसे केंद्र में आकर अपनी प्रस्तुति के माध्यम से योगदान देना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उस्ताद ने डेढ़ घंटे की परफॉर्मेंस में घुंघरू, डमरू, बुलेट बाइक और ट्रेन का साउंड निकाला था। यह अपने आप में बेहद खास प्रस्तुति थी। उस्ताद ने तबले से ही शंख और डमरू, हिरण की मनमोहक चाल और बारिश की बूंदों जैसी आवाज निकाल कर श्रोताओं को हैरत में डाल दिया था। इस दौरान वे बीच-बीच में श्रोताओं से मजाकिया अंदाज में संवाद भी कर रहे थे।

भोपाल में कार की टक्कर से तीन दोस्तों की मौत

बाइक पर सवार होकर शादी में शामिल होने जा रहे थे, सिरोंज रोड की घटना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरसिया इलाके में सिरोंज रोड पर सड़क हादसे में तीन दोस्तों की मौत हो गई। तीनों एक बाइक पर सवार थे। शादी में शामिल होने के लिए निकले थे। सामने से आ रही केयूवी कार ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मारी थी। एक्सीडेंट के बाद कार भी पलट गई थी। चालक कार को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। हादसे में दो युवकों की रविवार रात में ही मौत हो गई। एक ने इलाज के दौरान सोमवार की सुबह दम तोड़ दिया। तीनों की बॉडी हमीदिया हॉस्पिटल में पीएम के बाद सोमवार दोपहर को परिजनों को सौंप दी गई हैं। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। नीरज पिता कल्याण सिंह केवट (16) शुभम कुशवाह पिता प्रेम सिंह कुशवाह (18) और मिथलेश कुशवाह (21) तीनों ग्राम सागोनी गुनगा के रहने वाले थे। नीरज और शुभम गांव के स्कूल में एक साथ नौवीं कक्षा में पढ़ाई कर रहे थे। मिथलेश मजदूरी करता था। नीरज के मौसेरे भाई की शादी शमशाबाद में रविवार को थी।

फ्लेवर्स ऑफ इंडिया 2024 से पारंपरिक खान-पान, शिल्पकला और परिधानों को मिलेगी राष्ट्रीय और वैश्विक पहचान : मुख्यमंत्री

स्थानीय बुनकरों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से अपने उत्पाद बेचने के लिए किया जा रहा है प्रशिक्षित

दिल्ली में भारत मंडपम में हो रहा है आयोजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को सशक्त बनाने की दिशा में 16 दिसंबर से दिल्ली स्थित भारत मंडपम में होने वाला 'फ्लेवर्स ऑफ इंडिया कार्यक्रम' एक अद्भुत पहल है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की समृद्ध विरासत में निहित स्थानीय खानपान, शिल्पकला और वस्त्र उद्योग की पहचान को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने की यह एक अनूठी कोशिश है। इसमें भारतीय मूल अनाजों, विशेष रूप से मिलेट्स - जिन्हें 'श्री अन्न' के रूप में भी जाना जाता है, के पोषण लाभों और उनकी महत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। यह कदम आने वाली पीढ़ियों को हमारे पारंपरिक खानपान की ओर प्रेरित करेगा और स्वास्थ्य के प्रति एक नई जागरूकता लाएगा।

केन्द्रीय खाद्य प्र-संस्करण मंत्रालय द्वारा दिल्ली के भारत मंडपम में 16 दिसम्बर को 'फ्लेवर्स ऑफ इंडिया-2024' का आयोजन केन्द्रीय वस्त्र मंत्रालय, नीति आयोग, सर्व रिथु सेवा फाउंडेशन के सहयोग से किया जा रहा है। भारतीय खान-पान और परंपरागत परिधानों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने की दिशा में यह एक प्रयास है।

राज्य सरकार कर रही है वोकल फॉर लोकल में प्रदेश के हर जिले की विशेषताओं को प्रोत्साहित- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने वोकल फॉर लोकल के तहत अपने स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। खान-पान क्षेत्र में, प्रदेश के हर जिले की विशेषताओं को प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय व्यंजन महोत्सव आयोजित किए हैं। चंदेरी, भोपाल, और मालवा क्षेत्रों के खास व्यंजनों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए उन्हें फूड फेस्टिवल्स और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित किया गया है।

मुख्यमंत्री ने स्थानीय उत्पादों और परंपराओं को प्रोत्साहित करने का किया आव्हान- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वस्त्र उद्योग में, चंदेरी और महेश्वरी जैसे पारंपरिक वस्त्रों को बढ़ावा देने के लिए हस्तशिल्प विकास योजनाएं शुरू की गई हैं। स्थानीय बुनकरों को डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने उत्पाद बेचने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिससे वे सीधे अपने ग्राहकों से जुड़ सकें। हमने लोकल-टू-ग्लोबल के दृष्टिकोण के साथ इंटरनेशनल टेक्सटाइल एक्सपो भी आयोजित किए हैं। फ्लेवर्स ऑफ इंडिया जैसे आयोजनों के माध्यम से, स्थानीय कारीगरों, किसानों और बुनकरों की कला और परिश्रम को राष्ट्रीय और वैश्विक पहचान दिलाने में मदद मिलती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी आयोजकों को इस प्रयास के लिए बधाई देते हुए कहा कि यह पहल भारतीय खानपान और वस्त्र उद्योग को एक नई ऊंचाई पर ले जाने में मदद करेगी और वोकल फॉर लोकल को एक सशक्त दिशा प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी को इस पहल में शामिल होकर अपने स्थानीय उत्पादों और परंपराओं को प्रोत्साहित करने का आहवान किया।

भोपाल में बी टेक छात्र ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

देर रात पिता और दोस्तों को मैसेज किया, मुझे माफ कर देना, कुछ कर नहीं सका

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बी.टेक छात्र ने कमरे में फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। सोमवार की सुबह साथियों और मकान मालिक ने शव को कमरे से बाहर निकाला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बॉडी को कब्जे में लिया है। बॉडी का पीएम कराया जा रहा है।

मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। सुसाइड से पहले युवक ने रविवार की रात को अपने पिता और दो दोस्तों को मैसेज किए। उसमें लिखा कि मुझे माफ कर देना, कुछ कर नहीं सका। सभी से बहुत प्यार करता हूं।

पुलिस के मुताबिक हामिद रजा खान (23) नौशाद खान मूलरूप से बिहार के मोतीहारी जिला में स्थित ग्राम जलना का रहने वाला था। भोपाल के प्राइवेट कॉलेज में बी.टेक फाइनल ईयर ईसी ब्रांच की पढ़ाई कर रहा था। बीते तीन सालों से भोपाल के जहांगीराबाद इलाके में स्थित रसूलिया मस्जिद के पास एक किराए के कमरे में रहता था।

रविवार की देर रात उसने अपने साथियों और पिता को मैसेज किए और चादर का फंदा बनाकर पंखे के सहारे फांसी लगा ली। सुसाइड नोट नहीं मिलने से खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है।

मैसेज देख कमरे पर पहुंचे दोस्त

सोमवार की सुबह मैसेज देख दोस्त कमरे में चेक करने पहुंचे, जहां कमरा अंदर से लॉक मिला। किसी तरह से गेट खोला तो बॉडी फंदे पर लटकी हुई मिली। तत्काल पुलिस को सूचना दी गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बॉडी पीएम के लिए रवाना की। मामले की जांच की जा रही है।

मंत्री विजयवर्गीय से व्यापारी बोले-

कमर्शियल टैक्स खत्म हो

बीसीसीआई अध्यक्ष पाली ने कहा- सिर्फ भोपाल में ही वसूला जा रहा; पहले भी उठा चुके मांग

भोपाल (नप्र)। भोपाल चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (बीसीसीआई) ने एक बार फिर ट्रेड (कमर्शियल) और प्रोफेशनल टैक्स को खत्म करने की मांग उठाई है। सोमवार को नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय से बीसीसीआई पदाधिकारी मिले। अध्यक्ष तेजकुल पाल सिंह पाली ने कहा, भोपाल को छोड़कर एमपी में यह टैक्स कहीं भी नहीं लिया जा रहा है। इससे व्यापारियों पर बेवजह का

दबाव पड़ रहा है।

विधायक भगवानदास सबनानी के साथ मंत्री विजयवर्गीय से मिले व्यापारियों ने ज्ञापन भी सौंपा। इस पर मंत्री ने चर्चा की और आश्वस्त किया कि जब पूरे प्रदेश के किसी भी शहर में कमर्शियल लाइसेंस फीस लागू नहीं है, तो भोपाल एकमात्र ऐसा शहर क्यों है, जहां वाणिज्यिक लाइसेंस शुल्क लागू है। इस विषय पर विसंगतियों को हटाने का प्रयास करेंगे। चेंबर के अजय देवनानी, प्रदीप तिवारी आदि भी मौजूद थे।

इन दो टैक्स का विरोध कर रहे व्यापारी- एक्सपर्ट के अनुसार, नगर निगम सीमा में पहले जो भी व्यापार होता था, उसके बदले कुल 254 कैटेगरी का टैक्स लिया जाता था। जगह के हिसाब से अलग-अलग टैक्स होता था, जो सलाना वसूला जाता था। इसका सरलीकरण करने के लिए 4, 5 और 6 रुपए प्रति स्क्वायर प्रतिवर्ष के हिसाब से टैक्स लेना शुरू किया गया। यानी, यदि टैक्स 6 रुपए स्क्वायर फीट है और ऑफिस-दुकान 1 हजार स्क्वायर फीट है, तो 6 हजार रुपए टैक्स चुकाना होता है, जबकि पहले यह सिर्फ 450 रुपए ही लगता था। मुख्य रोड और गली में अलग-अलग कर लिया जाने लगा। इसका विरोध कर रहे हैं।

दूसरा टैक्स किराए पर चढ़ी बिल्डिंग से वसूला जाना है। इसे प्रॉपर्टी टैक्स के साथ जोड़ दिया गया है। जिससे बिल्डिंग मालिक पर पूरा लोड आ गया, जबकि जो किराए पर रह रहा है, उससे ही वसूला जाना चाहिए। पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह से यह मांग की गई थी। जिसके बाद यह टैक्स हटा दिया गया था, लेकिन अब फिर से जोड़कर आने लगा है। जिससे व्यापारियों की कमर टूट गई है। बीसीसीआई अध्यक्ष तेज कुलपाल सिंह पाली ने करीब एक महीने पहले भी सांसद और महापौर के सामने टैक्स को हटाने की मांग उठाई थी।

सांसद-मेयर के सामने भी उठा चुके मांग

करीब एक महीने पहले व्यापारियों ने दिवाली मिलन समारोह किया था। इसमें भी व्यापारियों ने सांसद आलोक शर्मा और मेयर मालती राय के सामने टैक्स को हटाने की मांग की थी। अध्यक्ष पाली ने शहर भर के व्यापारियों की मौजूदगी में कहा था कि एमपी में यह टैक्स कहीं नहीं लिया जा रहा, तो फिर भोपाल में ऐसा क्यों है? जवाब में मेयर मालती राय ने कहा कि इस पर विचार करेंगे।

विधानसभा नहीं घेर सके कांग्रेस नेता, मंच पर दी गिरफ्तारी

कमलनाथ बोले- एमपी की पहचान घोटाला प्रदेश की; ट्रैक्टर रैली को भी पुलिस ने रोका

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन कांग्रेस ने सरकार के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया। कांग्रेस ने विधानसभा के घेराव का ऐलान किया था। इसके लिए बड़ी संख्या में कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता राजधानी के जवाहर चौक पर जुटे। कांग्रेस नेताओं ने यहां सभा की। हालांकि यहां से विधानसभा घेराव के लिए नहीं जा सके।

सभा के बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी। यहीं से उन्हें रिहा भी कर दिया गया। पुलिस की ओर से कहा गया कि विधानसभा सत्र चल रहा है, धारा 144 लागू है। ऐसे में विधानसभा की ओर जाना निषेध है। जिसके बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी। इसके बाद कांग्रेस नेता आष्टा में खुदकुशी करने वाले मनोज परमार के बच्चों से मिलने आष्टा के लिए रवाना हो गए।भोपाल के जवाहर चौक पर सभा के बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी।

कमलनाथ बोले- एमपी की पहचान घोटाला प्रदेश की- भोपाल के जवाहर चौक पर कांग्रेस की सभा को संबोधित करते हुए पूर्व सीएम कमलनाथ ने कहा- आज बड़े दुख के साथ मुझे कहना पड़ता है कि मध्यप्रदेश की पहचान घोटाला प्रदेश की है। नौजवानों के रोजगार में घोटाला। किसानों के बीज-खाद में घोटाला। जहां देखो घोटाला-घोटाला।

ईडी के दबाव में कारोबारी ने आत्महत्या कर ली-पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा - पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा बोले- मनोज परमार और उनकी पत्नी नेहा ने बीजेपी, ईडी के दबाव में आत्महत्या कर ली। बीजेपी के लोग उनके बच्चों को लेकर तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। मैं कल अपनी पार्टी के तमाम साथियों से मदद लेकर एक बड़ी गुल्लक उन बच्चों को देने जाऊंगा ताकि उन्हें पढ़ाई के लिए भविष्य में तकलीफ न हो।

पुलिस ने कांग्रेस नेताओं की ट्रैक्टर रैली को रोका- इससे पहले सुबह करीब 11 बजे पार्टी विधायक भोपाल में रेडक्रॉस हॉस्पिटल के सामने शिवाजी चौराहे पर इकट्ठा हुए। वे यहां से ट्रैक्टर रैली के जरिए विधानसभा जाना चाह रहे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें शिवाजी नगर चौराहे के पास ही रोक लिया।

दूसरे जिलों से आ रहे कांग्रेस नेताओं को रोका- दूसरे जिलों से आ रहे कांग्रेस नेताओं को रोकने के लिए पुलिस ने भोपाल से लगी सड़कों पर बैरिकेड्स लगाए थे। राजगढ़ जिले से आए कार्यकर्ताओं को पुलिस ने रोका तो जिला पंचायत अध्यक्ष चन्दर सिंह राजगढ़ की अधिकारियों से बहस हो गई।

कांग्रेस नेताओं ने मंच से ही दी गिरफ्तारी

भोपाल में जवाहर चौक पर सभा करने के बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी। यहीं से उन्हें रिहा भी कर दिया गया। इसके बाद कांग्रेस नेता आष्टा में खुदकुशी करने वाले मनोज परमार के बच्चों से मिलने आष्टा के लिए रवाना हो गए। बता दें कि सभा के बाद कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता विधानसभा घेराव के लिए जाने की तैयार कर रहे थे। इससे पहले ही पुलिस की ओर से उन्हें कहा गया कि विधानसभा सत्र चल रहा है, ऐसे में धारा 144 लागू है। विधानसभा की ओर जाना निषेध है। जिसके बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी। पुलिस का दावा है कि यहां करीब 6 से 7 हजार लोग जुटे थे।

जयवर्धन बोले-जनता ने बीजेपी के लाड़ले रावत को घर बैठाया

पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह ने कहा- भाजपा सरकार ने लाड़ली बहन योजना की राशि 1250 रुपए में एक रुपया भी नहीं बढ़ाया। चुनाव जीतने के बाद बीजेपी ने लाड़ला नेता योजना शुरू की। उस लाड़ला योजना के सबसे पहले लाभार्थी बने रामनिवास रावत।

रामनिवास बीजेपी में गए लेकिन विजयपुर की जनता ने, माताओं-बहनों ने गरीब आदिवासी मुकेश मल्होत्रा को विधानसभा पहुंचा दिया। बीजेपी के लाड़ले नेता रामनिवास जी को घर बैठा दिया।

संपादकीय

जाकिर हुसैन का महाप्रयाण

तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन का अल्प बीमारी के बाद अमेरिका में निधन देश के महान संगीतकार का महाप्रयाण है। 73 साल की उम्र में उन्होंने सान फ्रांसिस्को में अंतिम सांस ली। उस्ताद कुछ समय से सांस की बीमारी से ग्रस्त थे। इस कारण तबले पर थिरकने वाली उनकी उंगलियां भी थम गई थी। बताया जाता है कि जाकिर हुसैन का निधन तो दो दिन पहले ही हो गया था, लेकिन परिजनों ने यह खबर किन्हीं कारणों से सार्वजनिक नहीं की। इसीलिए रविवार देर रात तक जाकिर के जाने को लेकर असमंजस बना रहा। तबला वादन जाकिर हुसैन को अपने पिता और विख्यात तबला वादक उस्ताद अल्लारक्खा खां से विरासत में मिला था। अल्लारक्खा उन हस्तियों में थे, जिन्होंने तबला नामक वाद्य से अमेरिका को परिचित कराया। हालांकि शोहरत के मामले में जाकिर हुसैन ने अपने पिता को भी पीछे छोड़ दिया था। ताज चाय के विज्ञापन में तबला बजाते हुए जाकिर हुसैन द्वारा बोला गया वाक्य 'वाह ताज बोलिए' तो अब एक आईकन बन चुका है। जाकिर हुसैन जिस परिवार में जन्मे वह मूलतः जम्मू के डोगरा राजपूतों का था, जिनके पूर्वजों ने काफी पहले इस्लाम स्वीकार कर लिया था। हालांकि अल्लारक्खा ने परिवार से बगावत कर संगीत साधना का रास्ता चुना, जिसे उनकी तीसरी पीढ़ी भी निभा रही है। पूत के पांव पालने में होते हैं की तर्ज पर जाकिर हुसैन ने बचपन से ही अपने हुनर का इजहार कर दिया था। उनकी उंगलियों में जादू था। वो सपाट जगह देखकर अपनी उंगलियों से धुन बजाने लगते थे। यहां तक कि किचन में बर्तनों को भी नहीं छोड़ते थे। तवा, हांडी और थाली, जो भी मिलता, वे उस पर हाथ फेरने लगते थे। मकबूल पिता के बावजूद जाकिर को शुरूआती दौर में संघर्ष करना पड़ा। पैसों की कमी से वो ट्रेन के जनरल कोच में यात्रा करते थे। लेकिन तबला हमेशा गोद में रखते थे। हालांकि वो उन संगीतकारों में से थे, जिन्हें उच्च शिक्षा मिली थी। यही कारण है कि हिंदुस्तानी संगीत के साथ-साथ उन्हें पाश्चात्य संगीत की भी गहरी जानकारी थी। दोनो संगीत को मिलाकर उन्होंने कई नए प्रयोग किए। साथ ही तबले को ताल वाद्यों की दुनिया में तबले को प्रमुख स्थान भी दिलवाया। खुद उन्होंने तीन साल की उम्र से तबला बजाना सीखना शुरू कर दिया था। जाकिर कहते थे कि वो प्लान करके तबला नहीं बजाते। मंच पर उनकी उंगलियां तबले पर खुद थिरकने लगती हैं। तबला वादन के साथ साथ जाकिर अपने लंबे और घुंघराले बालों के लिए भी मशहूर थे। महान तबला वादक जाकिर हुसैन को कई पुरस्कारों से नवाजा गया। 2023 में उन्हें भारत सरकार ने पद्म विभूषण से सम्मानित किया। इसके पहले उन्हें 1988 में पद्मश्री, 2002 में पद्म भूषण से नवाजा गया था। जाकिर हुसैन की पत्नी विदेशी और कथक नृत्यांगना हैं। जाकिर ज्यादा समय अमेरिका में ही रहते थे। उन्हें 2009 में पहला ग्रैमी अवॉर्ड मिला था। 2024 में उन्होंने 3 अलग-अलग एल्बम के लिए 3 ग्रैमी भी जीते। भारत के साथ-साथ अमेरिका में भी जाकिर को बहुत सम्मान मिला। 2016 में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उन्हें ऑल स्टार ग्लोबल कॉन्सर्ट में भाग लेने के लिए व्हाइट हाउस में आमंत्रित किया था। जाकिर हुसैन पहले इंडियन म्यूजिशियन थे, जिन्हें यह निमंत्रण मिला था। जाकिर ने हॉलीवुड फिल्म में एक्टिंग की जाकिर हुसैन ने कुछ फिल्मों में एक्टिंग भी की। उन्होंने 1998 की एक हिंदी फिल्म साज में भी काम किया था। इसमें उनकी हीरोइन शबाना आजमी थीं। कई नामी संगीतकारों, कलाकारों और राजनेताओं ने जाकिर हुसैन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए उन्हें अपनी और देश के लिए प्रेरणा बताया है। जाकिर हुसैन को हार्दिक श्रद्धांजलि।

आतंकवाद की ओट में निर्दोषों पर अत्याचार की बारी

नजरिया

अशोक भाटिया

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

जब सेना के जवान अपने ही देश में असुरक्षित हों और रोजाना मारे जा रहे हों तो अजीब सा लगता है ना! लेकिन पाकिस्तान की सेना इन दिनों ऐसे ही हालातों से जूझ रही है। पाकिस्तान की सेना में इस समय सैनिकों की मौतों से जबरदस्त हड़कंप मचा हुआ है। यहां नवंबर महीने में प्रतिदिन 4 पाकिस्तानी सैनिकों की हत्या हुई है। बड़ी संख्या में सैनिक घायल भी हुए हैं। उनके साथ गोला-बारूद, हथियार लूटने की घटनाएं भी हुई हैं। पाकिस्तान सरकार की हालत इस मामले में इतनी खराब है कि ना तो वह बोल पा रही है, ना चुप रह पा रही है। क्योंकि वजह उसकी खुद की पैदा की हुई है।

पाकिस्तान अफगानिस्तान सीमा और उसके आसपास के इलाकों में बीते नवंबर में पाकिस्तान के 138 सैनिकों की हत्या की घटनाए हुई है। पाकिस्तानी सेना पर 207 बार हमला हुआ है। इससे सैनिकों में खासी नाराजगी है। बताया जाता है कि ये हमले आतंकवादी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान कर रहा है।इसीके साथ पाकिस्तान सेना की भारी किरकिरी हो रही है। साथ ही सफाई दे रही है कि उसने आतंकवादियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर अभियान चलाया हुआ है और पिछले एक महीने के दौरान उसने 50 से ज्यादा आतंकवादियों को मार गिराया है। जाहिर है पाकिस्तान के लिए खुद का पैदा किया आतंकवाद ही उसका जानलेवा बन गया है।

पाकिस्तान सरकार और सेना दोनों ने ही इस मामले को दबाने की भरसक कोशिश की लेकिन नाकाम रही। इस मामले को दबाने के चक्कर में एक बार तो मरे हुए सैनिकों के शव जल्दी से हटाने के लिए उन्हें गधे पर लादकर ले जाया गया। लेकिन सैनिकों ने ही इसका वीडियो बना लिया और सरकार व सेना को भारी नाराजगी व बेइज्जती का सामना करना पड़ा।

इस बार टीटीपी ने सैन्य कर्मियों की हो रही हत्याओं के बाबत खुद ही एक पोस्टर जारी कर दिया है। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने पोस्टर में बताया गया कि नवंबर 2024 उन्होंने पाकिस्तानी सैनिकों पर 207 हमले किए। इस दौरान पाकिस्तानी सुरक्षा बलों की 138 लोग मारे गए और 112 लोग घायल हुए। यानी कि हर रोज पाकिस्तान सेना के 4 से ज्यादा सैनिक मारे और 4 से ज्यादा सैनिक घायल भी हुए।

टीटीपी के पोस्ट में यह भी बताया गया है यह हमले घात लगाकर किए गए। जिसमें 31 हमले, 88 लेजर हमले, 18 बम विस्फोट, 41 गोरिल्ला हमले आदि शामिल हैं। इन हमलों के दौरान पाकिस्तान सेना से 15 बुलेट प्रूफ जैकेट समेत बड़े पैमाने पर हथियार और गोला बारूद लूटा गया।

पाकिस्तान में आतंकवादी गतिविधियों और हमलों के चलते नवंबर का महीना मुल्क के लिए बेहद घातक साबित हुआ। एक रिपोर्ट के अनुसार दावा किया गया है कि पिछले महीने नवंबर में पूरे पाकिस्तान में आतंकवादी हमलों और हिंसक झड़पों की एक सीरीज में 68 सुरक्षाकर्मियों समेत कम से कम 245 लोग मारे गए। बड़ी संख्या में लोग घायल भी हुए।

स्थानीय अखबार डॉन ने के अनुसार भी इस्लामाबाद स्थित थिंक टैंक, पाकिस्तान इंस्टीट्यूट फॉर कॉन्फ्लिक्ट एंड सिक्योरिटी स्टडीज (पीआईसीएसएस) की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि नवंबर में पूरे पाकिस्तान में आतंकवादी हमलों में 245 लोग मारे गए, जिसमें 68 सुरक्षाकर्मियों शामिल हैं। मारे गए लोगों में 127 आतंकवादी और 50 नागरिक शामिल थे। इसके अलावा 257 लोग घायल भी हुए।नवंबर साल का दूसरा सबसे घातक महीना रहा। इससे पहले अगस्त सबसे बड़ा खूनी महीना साबित हुआ। इस महीने 92 नागरिकों के अलावा 108 आतंकवादी और 54 सुरक्षाकर्मियों समेत 254 लोगों की मौत हो गई थी। हालांकि सुरक्षाकर्मियों के हताहत होने के मामले में, नवंबर का यह महीना सबसे घातक महीना साबित हुआ। जबकि इससे पहले अक्टूबर का महीना सुरक्षाकर्मियों के लिए सबसे घातक साबित हुआ। इस महीने 62 सुरक्षाकर्मी मारे गए थे। लेकिन नवंबर में यह संख्या बढ़कर 68 तक हो गई।

यही नहीं इसके अलावा, झड़पों और बम धमाकों की घटना में 257 लोग घायल भी हुए, जिनमें 104 सुरक्षाकर्मी और 119 नागरिक शामिल हैं। हमलों, घायलों और हताहतों की संख्या में वृद्धि पिछले कुछ सालों में पूरे देश में आतंकवादी हमलों में तेज वृद्धि को दर्शाती है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि आतंकवादी हमलों में 131 मौतें हुईं, जिनमें 54 सुरक्षाकर्मी, 50 नागरिक और 27 आतंकवादी शामिल हैं।

हालांकि आतंकवादी गतिविधियों के मामले में नवंबर महीने में खासी वृद्धि देखी गई, जिसमें अक्टूबर में 68 की तुलना में 71 हमले दर्ज किए गए। आतंक से प्रभावित खैबर पख्तूनख्वा प्रांत सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र रहा। यहां पर 50 आतंकवादी हमलों में 71 लोगों की मौत हो गई जबकि 85 लोग घायल भी हुए।

पाकिस्तान सैन्य प्रशासन इस मुद्दे पर यह कहकर शांत हो गया कि उसने आतंकवादियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर अभियान चलाया हुआ है और पिछले एक महीने के दौरान उसने 50 से ज्यादा आतंकवादियों को मार गिराया है। पाकिस्तान सेना की बौखलाहट इस बात से ही स्पष्ट तौर पर दिखाई दे रही है कि उसने अफगानिस्तान पाकिस्तान सीमा समेत उन तमाम जगहों पर जहां आतंकवादी संगठनों के शिविर हो सकते हैं, पर क्वेटा कॉप्टर में खतरनाक बम लगाकर गिराने शुरू कर दिए हैं।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री कार्यालय के एक बयान के अनुसार, प्रांतीय शीर्ष निकायों के तहत जिला समन्वय समितियां आतंकवाद से निपटने के लिए संघीय उपायों के कार्यान्वयन की निगरानी करेंगी। इसके अतिरिक्त, खतरों की प्रभावी ढंग से पहचान करने और उनसे निपटने के लिए राष्ट्रीय आतंकवाद निरोधक प्राधिकरण (एनएसीटीए) और खुफिया संलयन केंद्रों को सक्रिय किया जाएगा। माना जा रहा है कि इस कदम से पाकिस्तान प्रशासन सेना के गुस्से को ठंडा करना चाहता है क्योंकि यह सभी सैनिक आतंकवादियों से लड़ते हुए मारे गए थे।

बताया तो यह भी जाता है कि इस आतंकवाद निपटने के लिए पाकिस्तान ने अपने दोस्त चीन से मदद मांगी है। इसके बाद दोनों देशों ने आतंकवाद से संयुक्त रूप से निपटने का प्लान बनाया है। पाकिस्तान और चीन के सैन्य अधिकारियों ने चीनी नागरिकों पर हुए हालिया हमलों के बाद आतंकवाद से निपटने और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर वार्ता की। एक सैन्य बयान के अनुसार, चीन के केंद्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) के उपाध्यक्ष और चीन के दो शीर्ष सैन्य अधिकारियों में से एक जनरल झांग यूक्सिया एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ पाकिस्तान के दौरे पर हैं। जनरल झांग ने बुधवार को सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर के साथ आमने-सामने बैठक की, जिसके बाद प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता हुई। बयान के अनुसार, बातचीत 'पारस्परिक हित से जुड़े मामलों, क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता, क्षेत्रीय स्थिरता के उपायों और द्विपक्षीय रक्षा सहयोग बढ़ाने' पर केंद्रित रही। जनरल झांग ने पाकिस्तान के आतंकवाद रोधी प्रयासों के बारे में बात की। पाकिस्तान में काम कर रहे चीनी नागरिकों पर हमले बढ़ने के कारण आतंकवाद दोनों देशों के बीच चर्चा का एक प्रमुख विषय बना हुआ है। समाचार पत्र 'डॉन' के अनुसार, कहा जा रहा है कि बीजिंग को अब अपने नागरिकों की सुरक्षा को लेकर पाकिस्तान पर भरोसा नहीं हो पा रहा है। लिहाजा अब चीन पाकिस्तान में अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में अधिक सक्रिय भूमिका चाहता है, लेकिन मंत्रालय का कहना है कि दोनों देशों के बीच आतंकवाद रोधी सहयोग एक-दूसरे की संप्रभुता के प्रति आपसी सम्मान पर आधारित है। डॉन की खबर के अनुसार, दोनों पक्षों ने क्षेत्र में भारत की भूमिका और अफगानिस्तान के घटनाक्रम, विशेष रूप से आतंकवादी समूहों की उपस्थिति के बारे में चर्चा कर रहे है ।

उधर पाकिस्तानी सेना में सुगबुगाहट है कि सेना लगभग 200 अरब डॉलर की व्यापारिक सम्राज्य की मालिक है। इसके बावजूद मारे गए सैनिकों को ले जाने के लिए हेलीकॉप्टर की जगह गधों का प्रयोग क्यों किया गया। सेना में यह भी सुगबुगाहट है कि हेलीकॉप्टर बड़े अधिकारियों के परिवारों को कहीं घुमाने ले गए थे। इसके अलावा मुख्यमंत्री मरियम नवाज भी हेलीकॉप्टर से कहीं गई थी, जिसके चलते सैनिकों को ले जाने के लिए हेलीकॉप्टर उपलब्ध नहीं हो सका और गधों का प्रयोग करना पड़ा।

उधर आतंकवादी संगठनों ने एक पोस्टर निकाला है जिसमें उन्होंने पुलिस थाने को फोन करते हुए दिखाया है और पुलिस कर्मियों से कहा है कि उन्हें यानी पुलिसकर्मियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। यानी कुल मिलाकर पाकिस्तानी प्रशासन का जमकर मखौल उड़ाया जा रहा है। अब यह तो तय है कि पाकिस्तान की सेना इस ऑपरेशन की आड़ में बलूचिस्तान और ख़ैबर पख्तूनख्वा में निर्दोष लोगों पर जमकर अत्याचार करेगी।

जाकिर हुसैन के निधन से शून्य हुई तबले की थाप

स्मृति शेष

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दुनियाभर में शास्त्रीय संगीत में भारत को अलग पहचान दिलाने वाले उस्ताद और मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन अब हमारे बीच नहीं रहे। 73 साल की उम्र में हुसैन ने अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में आखिरी सांस ली। उनके निधन से आज भारतीय संगीत की लय थम गई, सुर मौन हो गए, भाव शून्य हो गए। मौसिकी की दुनिया में हुसैन के तबले की थाप एक अलहदा पहचान रखती है, वे दुनिया भर के अनगिनत संगीत प्रेमियों द्वारा संजोई गई एक असाधारण विरासत छोड़ गए हैं, जिसका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों तक बना रहेगा। भारतीय तबले की गौरवशाली परंपरा की सुगंध विश्व भर में प्रसारित करने वाले हुसैन के अनंत में विलीन होने से गहन सन्नाटा छा गया है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं तबला वादन का दुनिया में विशिष्ट स्थान है, क्योंकि यह सत्यं, शिवं और सौन्दर्य की युगपत् उपासना की सिद्ध एवं चमत्कारी अभिव्यक्ति है। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत में क्रांति का शंखनाद किया।

उस्ताद जाकिर हुसैन का जन्म 9 मार्च 1951 को हुआ, जाकिर हुसैन तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा के बेटे थे। हुसैन का बचपन मुंबई में ही बीता। 12 साल की उम्र से ही जाकिर हुसैन ने संगीत की दुनिया में अपने तबले की आवाज को बिखेरना शुरू कर दिया था। प्रारंभिक शिक्षा और कॉलेज के बाद हुसैन ने कला के क्षेत्र में अपने आप को स्थापित करना शुरू कर दिया। 1973 में उनका पहला एलबम लिविंग इन द मैटेरियल वर्ल्ड आया था। उसके बाद तो जैसे जाकिर हुसैन ने ठान लिया कि अपने तबले की आवाज को दुनिया भर में बिखेरेंगे। 1979 से लेकर अब तक जाकिर हुसैन विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समारोहों और एलबमों में अपने तबले का दम दिखाते रहे। जाकिर हुसैन भारत में तो बहुत ही प्रसिद्ध थे साथ ही साथ विश्व के विभिन्न हिस्सों में भी समान रूप से लोकप्रिय थे। वे भारतीय संगीत जगत का एक उज्ज्वल नक्षत्र थे। वे पारम्परिक कौशल, रचनात्मकता एवं संवेदनशीलता से युक्त तबला वादन में कल्पनाशील विस्तार, गहन अलौकिकता और अचूक कलात्मक संयम एवं वैभव के लिये विख्यात थे। वे अपनी कला के अकेले महारथि थे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत एवं कला को लोकरंजन का साधन

बनाने के लिये क्लिष्टता को दूर कर उसे सुगम बनाया। ईश्वर को आलोकपुंज मानते हुए उससे एकाकार होकर अपनी कला को प्रस्तुति देते हुए हुसैन ऐसा प्रतीत कराते थे, मानो उनका ईश्वर से सीधा साक्षात्कार हो रहा है। यही कारण है कि उनके तबले वादन एवं संगीत साधना से रू-ब-रू होने वाले असंख्य लोग उनकी साधना में गौता लगाते हुए मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उनका यह स्थान सर्वोपरि रहा है, जिसे अब कोई पूरा नहीं कर सकता। उनके निधन से तबला वादन संसार की एक पाठशाला आज वीरान हो गई।

जाकिर हुसैन यूं तो सम्मान एवं पुरस्कारों से ऊपर थे। फिर भी उन्हें 1988 में जब पद्मश्री का पुरस्कार मिला था तब वह महज 37 वर्ष के थे और इस उम्र में यह पुरस्कार पाने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति भी थे। इसी तरह 2002 में संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें पद्म भूषण का पुरस्कार दिया गया था। 22 मार्च 2023 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। उस्ताद जाकिर हुसैन तबले को हमेशा आम लोगों से जोड़ने की कोशिश करते थे। यही वजह थी कि शास्त्रीय विधा में प्रस्तुतियों के दौरान बीच-बीच में वे अपने तबले से कभी डमरू, कभी शंख तो कभी बारिश की बूंदों जैसी अलग-अलग तरह की ध्वनियां निकालकर सुनाते थे। वे कहते थे कि शिवजी के डमरू से कैलाश पर्वत से जो शब्द निकले थे, वही शब्द लेकर उन्हें ताल की जुबान में बांधा। हम सब तालवादक, तालयोगी या तालसेवक उन्हीं शब्दों को अपने वाद्य पर बजाते हैं। गणेशजी इन सबके कुलदेव हैं। उस्ताद जाकिर हुसैन की शख्सियत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने महज 11 साल की उम्र में अमेरिका में पहला कॉन्सर्ट किया। यानी तकरीबन 62 साल तक उनका और तबले का साथ नहीं छूटा। उन्हें उनकी पीढ़ी के सबसे महान तबला वादकों में माना जाता है।

जब तबले का जिक्र आता है तो सबसे बड़े नामों में उस्ताद जाकिर हुसैन का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उन्होंने न सिर्फ अपने पिता उस्ताद अल्ला रक्खा खां की पंजाब घराने (पंजाब बाज) की विरासत को आगे बढ़ाया, बल्कि तबले के शास्त्रीय वादन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ले गए। उस्ताद को संगीत की दुनिया का सबसे बड़ा ग्रैमी अवॉर्ड 1992 में 'द प्लेनेट ड्रम' और 2009 में 'ग्लोबल ड्रम प्रोजेक्ट' के लिए मिला। इसके बाद 2024 में उन्हें तीन अलग-अलग संगीत एलबमों के लिए एकसाथ तीन ग्रैमी मिले। 1978 में जाकिर हुसैन ने कथक नृत्यांगना एंटोनिया मिनीकोला से शादी की थी। उनकी दो बेटियां हैं, अनीसा कुरैशी और इसाबेला कुरैशी। अनीसा ने यूसीएलए से स्नातक किया है और वह एक फिल्म निर्माता हैं। 1983 में जाकिर हुसैन ने फिल्म 'हीट एंड डस्ट' से अभिनय के क्षेत्र में कदम रखा। इसके बाद 1988 में 'द परफेक्ट मर्डर', 1992 में 'मिस बैटीज चिल्डर्स' और 1998 में 'साज' फिल्म में भी उन्होंने अभिनय किया।

हुसैन का तबला वादन का सृजन एवं संगीत मनोरंजन एवं व्यावसायिकता के साथ आध्यात्मिकता एवं सृजनात्मकता का आभामंडल निर्मित करने वाला है। उनके भारतीय शास्त्रीय संगीत की साधना एवं तबला वादन का उद्देश्य आत्माभिव्यक्ति, प्रशंसा या किसी को प्रभावित करना नहीं, अपितु स्वान्तः सुखाय, पर-कल्याण एवं ईश्वर भक्ति की भावना है। इसी कारण उनका शास्त्रीय संगीत, एवं तबला वादन स्वरों की साधना सीमा को लांघकर असीम की ओर गति करती हुई दृष्टिगोचर होती है। उनका उनका तबला वादन हृदयग्राही एवं प्रेरक है क्योंकि वह सहज एवं हर इंसान को आत्ममुग्ध करने, झकझोरने एवं आनन्द-विभोर करने में सक्षम है। भगवान शिव की जीवंतता को साकार करने वाला यह महान् कलाकार सदियों तक अपनी शास्त्रीय-संगीत साधना एवं तबला वादन के बल पर हिन्दुस्तान की जनता पर अपनी अमिट छाप कायम रखेगा। 90 के दशक में ताजमहल चाय के 'वाह ताज' विज्ञापन ने उन्हें हर घर में पहचान दिलाई। इस विज्ञापन में चाय की चुस्की लेते हुए उनकी तबला जुगलबंदी के दौरान बोली गई वाह ताज ने ताजमहल चाय को आम लोगों में फेमस कर दिया था।

जाकिर हुसैन के तबला वादन की तासीर ही है कि उन्हें सुनते एवं देखते हुए कोई शख्स तनावों की भीड़ में शांति महसूस करता तो किसी के अशांत मन के लिये वह समाधि का नाद होता है। उनका संगीत एवं तबला वादन चंचल चित्त के लिये एकाग्रता की प्रेरणा होता तो संघर्ष के क्षणों में संतुलन का उपदेश। वह एक दिव्य एवं विलक्षण चेतना थी जो स्वयं संगीत एवं तबला वादन में जागृत रहती और असंख्य श्रोताओं के भीतर ज्योति जलाने का प्रयास करती। हर जगह यह बेजोड़ तबला वादक शास्त्रीयता की राह पर चलते हुए भक्ति का एक लोकपथ सृजित करता था, धरती से ब्रह्माण्ड तक, संगीतप्रेमियों से वैज्ञानिकों तक, राजनीतिज्ञों से साधकों तक सबकी नजरें इस अलौकिक एवं विलक्षण तबला वादक पर लगी रहती थी। आधुनिक संदर्भों में शास्त्रीय तबला के मूर्धन्य एवं सिद्ध उपासकों की कड़ी में जाकिर हुसैन का देवलोकगमन होना एक महान संगीत एवं तबला परंपरा में गहरी रिक्तता एवं एक बड़े खालीपन का सबब है। भले ही मृत्यु उन्हें छिपा ले और महत्तर मौन उन्हें घेर ले, फिर भी उनके स्वर, तबला वादन एवं संगीत का नाद इस धरती को सुकोमलता का अहसास कराता रहेगा।

सम्मानजनक बुढ़ापे की गारंटी है पेंशन

दृष्टिकोण

रमेशचंद्र शर्मा

लेखक उज्जैन निवासी पत्रकार हैं।

वैसे तो पेंशन शब्द अंग्रेजों के जमाने से ही प्रचलन में आ चुका था मगर कर्मचारियों के संदर्भ में नहीं अपितु उस राशि के रूप में जो अंग्रेज अपने वफादारों को अनुग्रह राशि के रूप में देते थे। कर्मचारियों के लिए पेंशन आज़ादी के बाद आजाद भारत की सरकार ने देने का नियम बनाया था।ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस वक्त की सरकार लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को क्रियान्वित करने के लिए यत्नशील थी। पेंशन ऐसा ही एक प्रयत्न था सरकारी कर्मचारियों को सुरक्षित एवं सम्मानित बुढ़ापा जीने के लिए।

इस अधिकार को समाजवादी सिद्धांतों पर चलने के प्रयास में सरकार ने और अधिक व्यापक बनाया तथा फैमिली पेंशन देने की भी सार्थक पहल की। इसके तहत पेंशनर्स की मृत्यु के बाद उसकी आधी पेंशन उसके जीवनसाथी को मिलती है।जीवन साथी के नहीं होने पर यह पेंशन उसकी अविवाहित, तलाकशुदा बेटी को दी जाती है।मगर यह तभी तक दी जाती है जब तक वह विवाह अथवा पुनर्विवाह ना करे।अगर वह ऐसा कर लेती है तो मिलने वाली पेंशन बंद हो जाती है।

पेंशन दरअसल सेवानिवृत कर्मचारी के बुढ़ापे का सहारा होती है।जिसके जरिए वह समाज और परिवार में सुरक्षित और सम्मानजनक शेष जीवन व्यतीत कर लेता है।यह बात सही है कि उसकी संतान उसके साथ धोखा दे सकती है।उसे उसके हाल पर छोड़ सकती है मगर पेंशन उसका वह हितचिंतक बेटा/बेटी होती है जो कभी पेंशनर को उसके हाल पर बेसहारा नहीं होने देती है। अतः यह बेशक कहा जा सकता है कि पेंशन सरकार का वह मानवीय चेहरा होता है जो ना केवल अपने वयोवृद्ध कर्मचारियों को सुरक्षा देता है बल्कि समाज में सम्मानपूर्वक जीने की राह भी प्रशस्त करता है।

मगर अत्यंत खेद की बात है कि सन 2005 के बाद से नियुक्त होने वाले कर्मचारियों की पेंशन की पात्रता खत्म करने का क्रूर एवं अमानवीय कृत्य तत्कालीन सरकार ने किया। नतीतन लाखों कर्मचारियों का बुढ़ापा असुरक्षित हो गया। कालांतर में चुनावी राजनीति एवं अन्यान्य दबावों के चलते सरकार ने नई पेंशन नीति के तहत कई गलियारे निकाल कर टूटी फूटी पेंशन नीति न्यू पेंशन स्कीम के रूप में लागू की, मगर सरकार ने पुरानी पेंशन नीति को बहाल नहीं किया।अगर सरकार की नीति में खोट ना होती तो वह nps की कलाबाजियों की बजाय पुरानी पेंशन को जस की तस बहाल करती मगर सरकार ने ऐसा नहीं कर अपनी नीयत की खोट को जाहिर कर दिया।

सरकारी कर्मचारियों की पेंशन को खत्म करने वाली सरकार से एक सवाल सहज ही पूछा जाता रहा है कि जब सरकारी कर्मचारियों की पेंशन खत्म की जा सकती है तो महज पांच साल का कार्यकाल पूरे करने वाले नेताओं को सांसदी की अलग,विधायकी की अलग पेंशन आजीवन क्यों दी जा रही है ,वह भी तब जब वह राजनीति को जनसेवा का जरिया मानकर राजनीति करते हैं।तब यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि जब राजनीति नौकरी नहीं है तो नेताओं को एकाधिक पेंशन और जमाने भर की अतिरिक्त सुविधाएं क्यों?

बहरहाल पेंशन दिवस पर सरकार हो चाहिए कि वह सरकारी कर्मचारियों को उनकी ओल्ड पेंशन अपने मूलरूप में देने की घोषणा करे।आगे सरकार ऐसा करती है तो यह माना जा सकता है कि उसके मानवीय सरोकार हैं और अगर वह ऐसा नहीं करती है तो यह मानने में कोई संकोच नहीं है कि यह पक्षपाती और अमानवीय सरकार है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शब्दों का खतरनाक तड़का

व्यंग्य

ब्रजेश कानूनगो

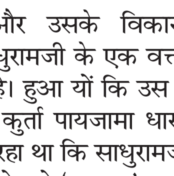

मेरे भाषा ज्ञान और उसके विकास की अवधारणा को साधुरामजी के एक वक्तव्य से काफी बल मिला है। हुआ यों कि उस दिन मैं नहा धोकर सफेद कुर्ता पायजामा धारण कर सुबह सुबह अखबार पढ़ रहा था कि साधुरामजी चले आए। कहने लगे, 'आज तो बड़े 'झकास' लग रहे हो बंधु!' 'झकास मतलब?' मैंने पूछा।

'मतलब यही कि बहुत खूबसूरत या सुंदर लग रहे हो आज!' उन्होंने आगे कहा, 'यदि कोई व्यक्ति किसी को देखकर 'झकास' कहे तो उसे भी 'सुंदर' के अर्थ में लिया जाना चाहिए। 'झकास' का भावार्थ होता है 'ऐसी सुंदरता जो आकर्षित करे।' साधुरामजी अक्सर इसी तरह मुझे उलझा कर चले जाते हैं।

इसी तरह इन दिनों बहुत से लोग 'खतरनाक' शब्द का भी उसके वास्तविक अर्थ से अलग अन्य संदर्भों में खूब प्रयोग करने लगे हैं। कोई पकवान उन्हें स्वादिष्ट लगता है तो बोलेंगे कि बड़ा 'खतरनाक' बना है। कोई खूबसूरत और अद्भुत वस्तु देखते हैं तो बोल पड़ते हैं, वाह!! कितनी खतरनाक चीज है। उनके लिए 'शानदार' शब्द का पर्यायवाची है 'खतरनाक'।

मैं सोचने लगा साधुरामजी की बात ठीक ही तो है। भाषा का भी क्रमिक विकास हुआ है जैसे भ्रष्टाचार का हुआ है। जब पहली बार किसी ने स्वार्थसिद्धी के लिए रिश्वत ली और दी होगी तब उसे कुछ भी कहा गया होगा 'भ्रष्टाचार' तो शायद नहीं ही कहा गया होगा। किसी अधिकृत काम को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पैसे लेकर काम कर दिए जाने को बुराई के रूप में 'दलाली' कहा जाता था लेकिन अब दलाली ही अधिकृत हो गया है। कमीशन कहें या फ्रेंचाइसी क्या फर्क पडता है। है तो वह दलाली ही। असल में भाषा अभिव्यक्ति को दूसरे तक पहुंचाने का माध्यम होती है और शब्द वे संकेत होते हैं जो उस क्रिया या अनुभूति को प्रमाणित करते हैं। सूरज को पृथ्वी कहने से वह आग उगलना बंद नहीं कर देगा। पहली बार किसी ने पृथ्वी को पृथ्वी तथा सूरज को सूरज कहा होगा। यदि सूरज को सबसे पहले 'जहाज' कह दिया होता तो जहाज से ही हमारे पास रोशनी और धूप पहुँचती।

सुबह का नजारा देखिए। भोर की कैसी सुन्दर बेला होती है। इधर पक्षियों का कलरव शुरू हुआ कि पूरब से सूरज की किरणें हल्का हल्का प्रकाश बिखेरने लगती हैं। पहाडियों के पीछे से धीरे-धीरे गुलाबी गोला ऊपर उठने लगता है। मन में अनोखा अहसास या अनुभूति पैदा होती है तो मुँह से निकल पड़ता है.. सुन्दर..अतिसुन्दर..! सुन्दर शब्द तो मात्र उस अनुभूति को पहचान दिलाने वाला संकेत है। यह प्रमाणीकरण यदि 'नमकीन' शब्द से प्रारम्भ में कर दिया गया होता तो हम सुन्दर या अतिसुन्दर की अनुभूति के लिए 'नमकीन' शब्द का संकेत चुनते और आज सुबह-सुबह का नजारा देखकर हमारे मुँह से निकलता... अहा..! क्या नमकीन नजारा है।

साधुरामजी अक्सर इसी तरह मुझे विचारक और भाषा विज्ञानी होने का भ्रम और गुमान का अवसर उपलब्ध कराते रहते हैं। एक सच्चा दोस्त ही ऐसा कर सकता है।

पहले सत्र के 68 वर्ष

नरेंद्र सिंह तोमर

अध्यक्ष, मध्यप्रदेश विधानसभा

लोकतंत्र का मंदिर और संविधान की आस्था का केंद्र मध्यप्रदेश विधानसभा

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जब 1956 में राज्यों का पुनर्गठन हुआ तो मध्यप्रदेश एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इसके घटक राज्यों में मध्यप्रदेश, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश एवं भोपाल थे, जिनकी अपनी विधानसभाएं थी। पुनर्गठन के पश्चात चारों विधानसभाएं एक विधानसभा में समाहित हो गई एवं 1 नवंबर 1956 को नई विधानसभा अस्तित्व में आई। इस विधानसभा का पहला अधिवेशन 17 दिसंबर 1956 को प्रारंभ हुआ था। उद्भट विद्वान पद्मविभूषण स्व. कुंजीलाल दुबे द्वारा मध्यप्रदेश विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में स्थापित की कई आसंदी की सम्माननीय परंपरा विगत 7 दशकों से सतत् स्थापित है। मध्यप्रदेश के निर्माण से अब तक 15 विधानसभा कार्यकाल पूर्ण हो चुके हैं, 16वां जारी है। इस कालखण्ड में मध्यप्रदेश विधानसभा अपने यशस्वी अध्यक्षों, उपाध्यक्षों, मुख्यमंत्रियों, प्रतिपक्ष के नेताओं, मंत्रियों, समिति सभापतियों, सम्माननीय सदस्यों एवं विधानसभा सचिवालयीन अधिकारियों-कर्मचारियों के अतुलनीय योगदान एवं असाधारण सहयोग के बल पर सदैव जनकल्याण एवं प्रदेश के विकास को समर्पित रही है। यह उल्लेखनीय है कि लगभग 2600 सदस्य मध्यप्रदेश विधानसभा के अब तक सदस्य रहे हैं। 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य के गठन से पूर्व अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा में कुल सदस्यों की संख्या 320 थी और विभाजन के पश्चात यह संख्या 230 हो गई है।

लोकतंत्र की जननी कहे जाने वाले दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत ने अपने महान संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से प्रजातांत्रिक व्यवस्था का एक अनुमप उदाहरण स्थापित किया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में राज्यों के विधानमंडलों की महति भूमिका रही है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं, कि अपनी स्थापना के 68 वर्ष पूर्ण कर रही मध्यप्रदेश विधानसभा का संसदीय परंपराओं के निर्वहन में एक गौरवशाली इतिहास रहा है।

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जब 1956 में राज्यों का पुनर्गठन हुआ तो मध्यप्रदेश एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इसके घटक राज्यों में मध्यप्रदेश, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश एवं भोपाल थे, जिनकी अपनी विधानसभाएं थी। पुनर्गठन के पश्चात चारों विधानसभाएं एक विधानसभा में समाहित हो गई एवं 1 नवंबर 1956 को नई विधानसभा अस्तित्व में आई। इस विधानसभा का पहला अधिवेशन 17 दिसंबर 1956 को प्रारंभ हुआ था।

उद्भट विद्वान पद्मविभूषण स्व. कुंजीलाल दुबे द्वारा मध्यप्रदेश विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में स्थापित की कई आसंदी की सम्माननीय परंपरा विगत 7 दशकों से सतत् स्थापित है। मध्यप्रदेश के निर्माण से अब तक 15 विधानसभा कार्यकाल पूर्ण हो चुके हैं, 16 वां जारी है। इस कालखण्ड में मध्यप्रदेश विधानसभा अपने यशस्वी अध्यक्षों, उपाध्यक्षों, मुख्यमंत्रियों, प्रतिपक्ष के नेताओं, मंत्रियों, समिति सभापतियों, सम्माननीय सदस्यों एवं विधानसभा सचिवालयीन अधिकारियों-कर्मचारियों के अतुलनीय योगदान एवं असाधारण सहयोग के बल पर सदैव जनकल्याण एवं प्रदेश के विकास को समर्पित रही है। यह उल्लेखनीय है कि लगभग 2600 सदस्य मध्यप्रदेश विधानसभा के अब तक सदस्य रहे हैं। 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य के गठन से पूर्व अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा में कुल सदस्यों की संख्या

320 थी और विभाजन के पश्चात यह संख्या 230 हो गई है।

भवन की दृष्टि से देखें तो मध्यप्रदेश विधानसभा को सदैव ही श्रेष्ठ वास्तु से सुसज्जित भवन प्राप्त हुए हैं। राज्य पुनर्गठन के पश्चात नवंबर 1956 से मध्यप्रदेश विधानसभा ऐतिहासिक मिंटो हॉल में लगी। 40 वर्ष तक यह भवन मध्यप्रदेश की संसदीय यात्रा का साक्षी बना। 1996 में अरेरा पहाड़ी पर नया भवन बनने के पश्चात अब विधानसभा यहां संचालित हो रही है।

विधानसभा सदैव स्मरित की जाती है, अपनी महान संसदीय परंपराओं के लिए। उन प्रयासों के लिए जो अतीत में लोकतंत्र की सुदृढ़ता, जनकल्याण की मंशा और प्रदेश के विकास के उद्देश्य से किए गए हों। सदन की आसंदी पर विराजमान रहे माननीय अध्यक्षों, सभापतियों ने सदैव ही पक्ष-विपक्ष की भावना से ऊपर उठकर नीर-क्षीर के विवेक से निर्णय किया और जन कल्याण को प्राथमिकता प्रदान की।

सदन में प्रश्नकाल, ध्यानाकर्षण, शून्यकाल, स्थगन, अशासकीय संकल्पों जैसी सभी विधाओं के माध्यम से सदस्यों की प्रदेश की जुड़ी समस्याओं, कार्यों का निराकरण करने का प्रयास सदैव ही किया गया है। सदन ने संसदीय नियमों और परंपराओं दोनों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के कल्याण पर चिंतन किया है।

मध्यप्रदेश विधानसभा में महिला शक्ति की भी सदैव महत्ता स्थापित रही है। सदन में महिला सदस्यों की पर्याप्त संख्या एवं महिला सदस्यों को अपनी बात रखने के लिए पर्याप्त समय एवं स्थान प्रदान किया जाता रहा है। यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि मुख्यमंत्री के रूप में सुश्री उमा भारती एवं नेता प्रतिपक्ष के रूप में स्व. जमुना देवी ने महिला नेतृत्व को सदन में प्रबल किया है। वर्तमान में कुल 27 महिलाएं सदन की सदस्य हैं।

प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप से विधानसभा के कार्य को प्रभावी, पारदर्शी, त्वरित और जवाबदेह बनाने की दिशा में ई-विधान पोर्टल और मोबाइल एप एक उल्लेखनीय पहल है। विधानसभा सदस्यों को आनलाइन प्रश्न, अशासकीय संकल्प, ध्यानाकर्षण, शून्यकाल, स्थगन संबंधित सूचनाएं देने एवं उनकी पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए यह एक व्यवस्थित प्रक्रिया प्रदान करता है।

मध्यप्रदेश विधान सभा का पुस्तकालय बहुत धनाढ्य इन अर्थों में है कि सम्पूर्ण भारत में अन्य किसी भी राज्य विधान सभा के पास इतना वृहत् एवं समृद्ध पुस्तकालय संभवतः नहीं है। प्राचीन ग्रन्थों, सन्दर्भ पुस्तकों, विधि, साहित्य, इतिहास, पुराण, संसदीय प्रणाली, मानवशास्त्र एवं अनेक विषयों पर कई भाषाओं में विश्व लेखों की असंख्य पुस्तकों का भण्डार है। विधान सभा सदस्यों और शोध छात्रों को प्रचुर साहित्य सामग्री सहज उपलब्ध हो जाती है।

मध्यप्रदेश विधानसभा लोकतंत्र का एक ऐसा मंदिर है, संविधान में पूर्ण आस्था के साथ जनकल्याण की ऋचाएं रची जाती है। सात दशक की इस संसदीय यात्रा ने मध्यप्रदेश विधानसभा को अपने हर अनुभव के साथ समृद्ध बनाया है। हम सदैव नत मस्तक हैं उन विभूतियों के जिन्होंने सदन में अपने अमूल्य योगदान से प्रदेश के विकास को नई दिशा प्रदान की। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सदन इसी गरिमा सदैव लोककल्याण की पताका फहराता रहेगा।

साहित्य

अनिल त्रिवेदी

लेखक अभिभाषक हैं।

कहानी, उपन्यास लिखना और पढ़ना धीरज की बात

दुनिया का प्रत्येक जीव अपने अपने ढ़ंग से कुछ न कुछ करता ही रहता है। पर कहानी और उपन्यास लिखना मनुष्य मात्र का एकाधिकार है। प्रत्येक मनुष्य या लेखक की हर एक कहानी और उपन्यास में एकरूपता नहीं होती। मनुष्य और लेखक मूलतः एक ही माया है, मनुष्य संज्ञा हैं तो लेखक विशेषण, इसी से मनुष्य को मनुष्य होने का विशिष्ट भाव नहीं होता है पर लेखक विशिष्टता की अभिव्यक्ति से प्रायः मुक्त नहीं हो पाता। फिर भी मनुष्य को महज़ मनुष्य होने से तृप्ति नहीं होती है तो वह कुछ न कुछ करता ही रहता है और उस पर अपना दावा या श्रेय लेने की कोशिश भी करता रहता है। मनुष्य अपनी किये से सदैव संतुष्ट नहीं रहता है, यही असंतोष मनुष्य को आजीवन नाना गतिविधियों में लिप्त रखता है। गतिविधियों में व्यस्त रहना एक बात है और हड़बड़ी में अस्त-व्यस्त रहना एक दम अलग बात है। लेखन और सृजन धीरज की संतान हैं ।

कहानी,उपन्यास लिखना और पढ़ना दोनों ही बातें हर किसी के बस में नहीं है। असीम धीरज चाहिए।वैसे तो इस दुनिया में कुछ भी किसी के बस में नहीं होता है फिर भी मनुष्य कुछ न कुछ नया करने की जुगाड़ में धीरज के साथ लगा ही रहता है, मनुष्य जब भी कुछ नया सोचता है तब उसे पता नहीं होता कि वह कुछ नया सोच रहा है।पर उसका सोचा या लिखा जब पूरा हो जाता है तो जो लिखा गया है उसे पढ़कर उसे वैसी अनुभूति नहीं होती हैं जैसी लिखने से पहले मन में व्यक्त हो रही थी। मनुष्य इस दुनिया में एक मात्र अकेला प्राणी नहीं है जो आजीवन कुछ न कुछ करता ही रहता है। दुनिया का प्रत्येक जीव अपने अपने ढ़ंग से कुछ न कुछ करता ही रहता है।पर कहानी और उपन्यास लिखना मनुष्य मात्र का एकाधिकार है। प्रत्येक मनुष्य या लेखक की हर एक कहानी और उपन्यास में एकरूपता नहीं होती। मनुष्य और लेखक मूलतः एक ही माया है,मनुष्य संज्ञा हैं तो लेखक विशेषण,इसी से मनुष्य को मनुष्य होने का विशिष्ट भाव नहीं होता है पर लेखक विशिष्टता की अभिव्यक्ति से प्रायः मुक्त नहीं हो पाता। फिर भी मनुष्य को महज़ मनुष्य होने से तृप्ति नहीं होती है तो वह कुछ न कुछ करता ही रहता है और उस पर अपना दावा या श्रेय लेने की कोशिश भी करता रहता है। मनुष्य अपनी किये से सदैव संतुष्ट नहीं रहता है, यही असंतोष मनुष्य को आजीवन नाना गतिविधियों में लिप्त रखता है। गतिविधियों में व्यस्त रहना एक बात है और हड़बड़ी में अस्त-व्यस्त रहना एक दम अलग बात है। लेखन और सृजन धीरज की संतान हैं ।

एक ही कथानक पर अनगिनत कहानियां लिखी जा चुकी है और लिखी जाती रहेगी। उपन्यास भी मनुष्य के लेखकीय कृतित्व की ही महागाथा है। जब भी कोई मनुष्य लिखने बैठता है तो वह इस बात की चिंता नहीं करता है कि वह जो लिख रहा है वैसा पहले कभी भी लिखा ही नहीं गया है। फिर भी कुछ नया लिखने की आशा में मनुष्य लिखता ही रहता है। पर मनुष्य का लिखा लेखन समाप्त होते-होते नया लगना एक तरह से समाप्त हो जाता है।जब हम कलम कागज लेकर लिखने बैठते हैं तो जो उत्साह और उमंग लेखक के मन में होती है वैसी लेखन समाप्त होने पर लेखक के मन में नहीं होती हैं।पहला सवाल मन में यह उठता है कि यह पढ़ने वालों को पसंद आयेगा यह छपेगा या नहीं या छप भी गया तो लोग इसे पढ़ेंगे या नहीं? अगर पाठकों ने पढ़ भी लिया तो उन्हें कैसा लगा? जैसे अनेक सवाल लिखने वाले लेखक के मन में आते हैं। याने लेखक की दृष्टि ही एकदम से बदल जाती है।अब लेखक अपने विचार या लिखे पर सोचना बंद कर पाठकों की प्रतिक्रिया को लेकर सोचने लगता हैं। इस कारण लेखक की विचार शैली में एकाएक बदलाव होता है और वह पाठकों की प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा करने लगता है।

अपने अंदर लिखने की भूख जगना और दूसरों की प्रतिक्रिया को जानने की जिज्ञासा या उत्कंठा पैदा होना एक दम भिन्न बात है। एक हमारे अंदर से निकले विचार का सृजनात्मक स्वरूप या अभिव्यक्ति है तो दूसरा किसी अन्य के अंदर उठे भावों को जानने की उत्कंठा। आखिर हम लिखते क्यों है? जैसे हम रोटी क्यों बनाते हैं? सीधा उत्तर है खाने या भूख शांत करने के लिए या यह ऐसा तो नहीं है कि रोटी कैसी बनी इस पर चर्चा या प्रतिक्रिया या समीक्षा बैठक के लिए तो हम रोटी नहीं बनाते! सीधी सी बात है भूख शांत या स्वपोषण हेतु हम अनाज भी उगाते हैं, चूल्हा भी जलाते हैं और रोटी बनाकर खुद भी खाते हैं और परिवार एवं अतिथियों को भी समय-समय पर खिलाते हैं। लेखन, सृजन और चिंतन ये त्रिविधा मनुष्य के अन्तर्मन की भूख को शांत या तृप्त करने के निराकार साधन है जो मनुष्य को स्वयं अपने निराकार से अपने ही हाथों साकार होते कृतित्व से प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराते रहते हैं। जैसे सुबह शाम मनुष्य को भूख लगती है और भोजन भूख को तृप्त और पोषित करता है वैसे ही मनुष्य में सृजनात्मक शक्ति के कारण हर-दिन कुछ न कुछ नया करना और सृजनात्मक कार्यों को मन और तन से सम्पन्न करने का आजीवन सिलसिला चलता ही रहता है। जैसे हम सब सुबह उठकर एकदम किसी न किसी कर्म में लग जाते हैं। पैरों का काम चलना है पर हम केवल अपने निवास की सरहद में ही चलकर अपना जीवन नहीं बिताते हैं। बाहर घर से दूर धूमने जाते हैं। पैरों को चलाने की क्रिया एक ही रूप स्वरूप की है पर उसे कदम ताल ऊपर नीचे करते हुए जीवन भर जी नहीं कर सकते, कदमों को हरदम आगे बढ़ाना ही होता हैं। पैरों के पराक्रम से पैदल धूमने से तरोताजा महसूस करते हैं। घर से बाहर न निकल पाने पर मन में उत्साह नहीं पैदा होता है। कभी अपने पैरों लम्बी यात्रा कर ली तो घर से बाहर की दुनिया को जिस तरह देखा उसे सुनाने की इच्छा मन में अपने आप पैदा हो जाती है। सृजन करना सरल भी है और कठिन भी है पर सृजनात्मक शक्ति को मन और तन में आखरी सांस तक बनाए रखना मनुष्य का स्वपराक्रम ही माना जाएगा जो मनुष्य ऐसा कर पाते हैं वे प्राकृतिक अवस्था में जीवन जीते हुए प्रति क्षण साकार निराकार का जो अंतहीन सिलसिला जारी है उसे साकार स्वरूप में जीते जी समझ पाते हैं।

मध्यप्रदेश सरकार का एक साल

डॉ. आरके पालीवाल

लेखक पूर्व आयकर आयुक्त हैं।

चार सालों में जनकल्याण, अधिक जवाबदेही की उम्मीद

सरकार द्वारा अपनी योजनाओं का गुणगान करना और विपक्ष द्वारा सरकार की खामियों को उजागर करना दोनों सामान्य बाते हैं। किसी सरकार की सही आलोचना तटस्थ पत्रकारिता और प्रबुद्ध जनों द्वारा ही संभव है। कई अखबारों ने मध्य प्रदेश सरकार के एक साल की विफलताओं को ध्यान में रखते हुए सरकार से कुछ प्रश्न भी पूछे हैं, मसलन मुख्यमंत्री के पास बहुत ज्यादा विभाग क्यों हैं, क्या इन विभागों को अन्य अनुभवी मंत्रियों में बांटना ज्यादा कारगर नहीं होगा, और मंडलों और निगमों के अध्यक्षों की नियुक्तियों में इतना समय क्यों लग रहा है आदि आदि। जहां तक प्रदेश के आम आदमी के व्यापक कल्याण का प्रश्न है पिछले एक साल में सरकार की ऐसी कोई नई योजना नहीं बनी जिससे आम जनता यह कह सके कि उसे जन कल्याण के व्यापक कार्य होने से कोई बड़ी राहत मिली है।

मध्य प्रदेश की नई सरकार ने एक वर्ष का कार्यकाल पूरा कर लिया। प्रदेश के तमाम प्रमुख अखबारों में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के साक्षात्कार प्रकाशित हुए हैं जिनमें उन्होंने अपनी सरकार की नदी जोड़ो परियोजनाओं और ग्लोबल इन्वेस्टर मीट आदि कार्यक्रमों को मील के पत्थर की तरह प्रदेश की जनता के बहुत हितकारी बताया है। इसी तरह भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश से जुड़े नेताओं ने भी अपनी सरकार के एक साल के कार्यकाल को जन कल्याणकारी बताते हुए अपनी तारीफ के पुल बांधे हैं। दूसरी तरफ विपक्षी नेताओं ने सरकार की कई विफलताओं को गिनाया है।

सरकार द्वारा अपनी योजनाओं का गुणगान करना और विपक्ष द्वारा सरकार की खामियों को उजागर करना दोनों सामान्य बाते हैं। किसी सरकार की सही आलोचना तटस्थ पत्रकारिता और प्रबुद्ध जनों द्वारा ही संभव है। कई अखबारों ने मध्य प्रदेश सरकार के एक साल की विफलताओं को ध्यान में रखते हुए सरकार से कुछ प्रश्न भी पूछे हैं, मसलन मुख्यमंत्री के पास बहुत ज्यादा विभाग क्यों हैं, क्या इन विभागों को अन्य अनुभवी मंत्रियों में बांटना ज्यादा कारगर नहीं होगा, और मंडलों और निगमों के अध्यक्षों की नियुक्तियों में इतना समय क्यों लग रहा है आदि आदि। जहां तक प्रदेश के आम आदमी के व्यापक कल्याण का प्रश्न है पिछले एक साल में सरकार की ऐसी कोई नई योजना नहीं बनी जिससे आम जनता यह कह सके कि उसे जन कल्याण के व्यापक कार्य होने से कोई बड़ी राहत मिली है।

वैसे पांच साल के लिए चुनी गई सरकार के लिए पहला

साल पिछली उन चीजों को दुरुस्त करने का होता है जो पटरी से उतरी हुई थी। सरकार के पहले साल में कोई विशेष कार्य नहीं होने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि इस दौरान काफी समय सरकार का ध्यान लोकसभा चुनाव में लगा था। इस दौरान प्रदेश में चीफ सेक्रेटरी और पुलिस महानिदेशक भी बदले हैं और बड़े पैमाने पर अधिकारियों की ट्रांसफर पेस्टिंग भी हुई हैं। इन सबके चलते भी विकास के कार्यों में कोई खास गति नहीं आई।

जहां तक जनता से जुड़ी प्रमुख समस्याओं का प्रश्न है प्रदेश की सड़कों की स्थिति खस्ताहाल है। राजधानी भोपाल में भी सड़कों के हालात अत्यंत त्रासद हैं । उदाहरण के लिए भोजपुर रोड, जो भोजपुर शिव मंदिर के प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल तक जाती है, जिसे महा लोक बनाने की घोषणा काफी समय पहले हो चुकी है, उस पर दिन भर धूल के गुबार उड़ते रहते हैं। सड़क पर सड़क कम और गड्ढे ज्यादा हैं। पी डब्ल्यू डी के वरिष्ठ इंजीनियर जनता के फोन नहीं उठाते। यही स्थिति अधिकांश विभागों के अफसरों की है। किसानों को रबी की प्रमुख फसल के लिए खाद की किल्लत हो रही है। भ्रष्टाचार पर सरकार का अंकुश दिखाई नहीं देता। पत्रकारों ने कई विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार के सबूत जुटाए हैं। परीक्षाओं में गड़बड़ी की भी काफी शिकायतें हैं। भ्रष्टाचार आम जनता के लिए बड़ी मुसीबत बना हुआ है।

हाल ही में हुए उपचुनाव में सरकार के कामकाज के बारे में जनता का गुस्सा भी सामने आया है। सरकार के एक कैबिनेट मंत्री का तमाम साधन सुविधाओं के बावजूद चुनाव हारना सीधे सीधे सरकार की शिथिलता का प्रमाण है। जिस तरह से जनता ने पहले विधानसभा और उसके बाद लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड जीत दिलाई थी, एक साल आते आते विधानसभा के उपचुनाव में वह स्थिति नहीं रही। वैसे भाजपा की ही पिछली सरकार की तुलना में इस सरकार में कुछ त्वरित कार्य भी हुए हैं जिनमें कई साल से लटका रातापानी टाइगर रिजर्व घोषित होना प्रमुख है। कई साल से अटकी हुई इस योजना पर अन्ततः कार्यान्वयन हो गया। उम्मीद की जानी चाहिए कि बाकी चार साल में सरकार अपनी कमियों पर ध्यान केंद्रित कर जन कल्याण के कार्यों को तेज गति देगी, सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को जनता के प्रति संवेदनशील और जवाबदेह बनाएगी और भ्रष्टाचार के अजगर पर अंकुश लगाएगी।

राइट क्लिक

संविधान बहस: राहुल पर भारी प्रियंका की वक्तृत्व फनकारी!

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

देश में संविधान स्वीकार होने के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में संसद के दोनों सदनों में 13 घंटे से ज्यादा चली विशेष चर्चा संविधान और भारत के भावी स्वरूप को लेकर गंभीर बहस से ज्यादा राजनीतिक आरोपों में उलझ गई। यह भी उजागर हुआ कि खुदा न खास्ता अगर आज के राजनेताओं पर एक नव स्वतंत्र देश का संविधान गढ़ने की जिम्मेदारी आन पड़ती तो वो इसे किस तरह निभाते। निभा पाते भी या नहीं? चूंकि संविधान पर आयोजित बहस का मूल लक्ष्य विपक्ष और सत्तापक्ष द्वारा एक-दूसरे को कटघरे में खड़ा करना ही था, ऐसे में देश के आम नागरिक के लिए कौतूहल का विषय सिर्फ इतना था कि गांधी परिवार से पहली बार चुनकर संसद में पहुंची प्रियंका गांधी और लोकसभा में 20 साल से जनप्रतिनिधि के रूप में मौजूद उनके सगे भाई राहुल गांधी में बेहतर संसदीय वक्ता कौन है। निस्संदेह प्रभावशीलता के पैमाने पर प्रियंका ने पहली ही गेंद पर चौका मारकर जता दिया है कि अभिव्यक्ति की असरदारी, वैचारिक स्पष्टता, उच्चारण की शुद्धता, हिंदी भाषा पर पकड़, सही शब्द चयन और मन मस्तिष्क की एकरूपता के मामले में वो अपने भाई पर भारी साबित होंगी। हालांकि खुद राहुल गांधी भी अपनी बहन के पहले भाषण पर गदगद थे, लेकिन यह खुशी जल्द ही अघोषित प्रतिस्पर्द्धा में भी बदल सकती है। संसदीय भाषणों के साथ सार्वजनिक सभाओं के लिए भी प्रियंका भी डिमांड राहुल से ज्यादा हो सकती है। हालांकि अच्छी संचारक होने के बाद भी प्रियंका उसको वोटों में तब्दील करने में ज्यादा सफल नहीं हो पाई हैं।

हैरानी की बात यह थी कि संविधान पर बोलते हुए राहुल गांधी ने अपने वक्तव्य का ज्यादातर हिस्सा अंग्रेजी में दिया, जबकि वो अब हिंदी भाषी रायबरेली सीट से सांसद हैं। इसके विपरीत प्रियंका केरल की वायनाड सीट का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहां की भाषा मलयालम है और लोकसभा उपचुनाव में उन्होंने मतदाताओं से अंग्रेजी में ही संपर्क किया था। बावजूद इसके प्रियंका ने हिंदी में ही अपनी बात सदन में रखी। वैसे यह भी शोध का विषय है कि एक ही परिवार और समान परिवेश में पलने के बाद भी राहुल गांधी की हिंदी इतनी कमजोर और प्रियंका की हिंदी ज्यादा प्रभावी और कम्युनिकेटिव क्यों है? क्या ऐसा आम लोगों के बीच ज्यादा रहने के कारण है, जनता से जुड़ाव के लिए हिंदी के अच्छे ज्ञान की महत्ता को समझना है या फिर दोनो की समझ (ग्रास्पिंग) में फर्क इसकी वजह है।

यूं तो इस बहस में करीब डेढ़ दर्जन लोगो ने भाग लिया। इसमें खुद को और अपनी पार्टी को संविधान की रक्षक और प्रतिपक्ष को संविधान का भक्षक साबित करने की कोशिशें हुई। चूंकि यह कोई अकादमिक चर्चा नहीं थी, इसलिए संविधान के भावी स्वरूप और चुनौतियों पर बात होगी, इसकी संभावना नहीं के बराबर ही थी। जो बहस हुई, उससे यह कहीं भी नहीं झलका कि देश के कर्णधार संविधान के संदर्भ में भविष्य की सदी को लेकर क्या और कितनी संजीदगी से सोचते हैं, संविधान की मूल आत्मा को संरक्षित करने में उनकी प्रतिबद्धता कितनी और कैसी है। संविधान लागू होने के 70 साल बाद तक संविधान देश के पवित्रतम दस्तावेज के रूप में देखा जाता रहा है। लेकिन इस लोकसभा चुनाव में यह चुनावी अस्त्र के रूप में इस्तेमाल हुआ। उसका कुछ फायदा विपक्ष को मिला भी। सत्तारूढ़ एनडीए रक्षात्मक मुद्रा में आया। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार संविधान बदलना चाहती है, विपक्ष के इस आरोप में बहुत स्पष्टता न होने से यह मुद्दा विधानसभा चुनावों में नहीं चल पाया। राहुल गांधी ने अपने भाषण में दोहराया कि देश की भावी राजनीति अब इस आधार पर तय होगी कि देश को बाबा साहब अंबेडकर के संविधान या हिंदुओं के एक ग्रंथ मनुस्मृति के आधार पर चलाया जाएगा। लेकिन कैसे, यह बहुत स्पष्ट नहीं था। राहुल जब बोलते हैं तो लगता है कि उनके पास कहने को बहुत कुछ है, लेकिन वह वाणी और मस्तिष्क के अंतर्द्वंद्व में कहीं फंस गया है। क्योंकि आप जो लोगों से कह रहे हैं, उससे स्वयं का सौ फीसदी सहमत होना भी जरूरी होता है। राहुल टुकड़ों-टुकड़ों में मुद्दे तो उठाते हैं, लेकिन वाक्यों को पूर्णता और निरंतरता के साथ अक्सर नहीं बोलते, जिससे श्रोता की उत्कंठा बीच में ही दम तोड़ देती है। दरअसल प्रभावी वक्तृत्व एक कला है, जो विरासत में नहीं मिलती। वह या तो जन्मजात होती है या फिर उसे सतत अभ्यास से अर्जित करना पड़ता है। सहयोगी भाषण के लिए आपको मुद्दे दे सकते हैं, लेकिन उन मुद्दों को परोसने का हुनर नहीं दे सकते। इसी फिनिश लाइन पर प्रियंका अपनी पहली मेराथन रेस में राहुल से आगे जाती दिखीं। हालांकि उन्होंने राहुल के मुद्दों को राहुल के भाषण से पहले ही उठा दिया था, लेकिन सहज, शालीन और संयत अंदाज में। उन्होंने कहा कि संविधान 'सुरक्षा कवच' है लेकिन सत्तारूढ़ पार्टी (भाजपा) इसे तोड़ने की कोशिश कर रही है। लोकसभा चुनाव में बीजेपी की कम सीटों ने उसे संविधान के बारे में बात करने के लिए मजबूर कर दिया है। उन्होने तीखा प्रहार करते हुए कहा कि अगर लोकसभा चुनाव में बीजेपी का ये हाल नहीं हुआ होता तो वो कब से संविधान बदलने का काम शुरू कर चुकी होती। उन्होंने पीएम मोदी पर भी तगड़ा प्रहार करते हुए कहा कि वो भारत का नहीं 'संघ' का संविधान समझते हैं। यहां संघ से प्रियंका का आशय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से था। हालांकि संविधान में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द 'फेडरल स्टेट' का हिंदी अनुवाद भी 'संघ राज्य' ही है।

संविधान पर चली संसदीय बहस में प्रियंका गांधी 32 मिनट तक बोलीं। इस दौरान उनके चेहरे पर कई बार हल्की मुस्कुराहट तो कभी कटाक्ष के भाव दिखे। बातों का दोहराव बहुत कम था। जबकि राहुल गांधी ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होने के बाद भी अपनी बात 26 मिनट में ही समेट दी। वो चाहते तो यह विस्तार से बता सकते थे कि कांग्रेस ने ही देश की आत्मा के अनुरूप संविधान दिया है और इसके लिए हर संभव कोशिश की है। लेकिन राहुल संविधान बचाने, जातिगणना, अल्पसंख्यक, पिछड़ों, दलित व आदिवासियों को न्याय की ही बात करते रहे, जो वो कुछ समय से लगातार कहते आ रहे हैं। शास्त्रीय संगीत में दोहराव एक गुण है, लेकिन सियासत में वो जनता के कान पकने का कारण भी बन सकता है। यही नहीं, राहुल संसद में भी केज्युअल अंदाज में टी शर्ट पहन कर आते हैं। यह उनका स्टाइल स्टेटमेंट हो सकता है। इम्फार्मल दिखने और महसूस कराने की कोशिश हो सकती है। इसके विपरीत सदन में गंभीर चर्चा को वक्तृत्व के मान्य पैमानों पर ही आगे बढ़ाना होता है। वहां इम्फार्मल होना, इनकॉम्पिटेंट होना भी हो सकता है। जज्बात के साथ भाषा की सहज जुगलबंदी, सही शब्द चयन, ठोस मुद्दे और बात आपके दिल से निकली है, यह संदेश जाना भी जरूरी है।

संविधान पर समूची बहस का जवाब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 110 मिनट के अपने भाषण में दिया। मोदी का भाषण अकादमिक पैमाने पर भले उतना प्रभावी न लगे, लेकिन आम लोगों तक अपनी बात प्रभावी ढंग से पहुंचाने की कला उनके पास है। उन्होंने विपक्ष के प्रत्येक हमले का तथ्यों के आधार पर जवाब दिया। मोदी के भाषण का लुब्बो-लुआब यही था कि कांग्रेस और उसके कर्णधार संविधान कैसे बचाना है, यह हमे न सिखाएं। उन्होंने संविधान के प्रति कांग्रेस के 'पाप' गिनाते हुए कहा कि देश में आपातकाल लगाना और मौलिक अधिकारों को निलंबित करना सबसे बड़ा पाप था। हमने तो दस साल में वैसा कुछ भी नहीं किया। फिर भी हमारी नीयत पर प्रश्नचिन्ह क्यों?

इस परस्पर आरोप-प्रत्यारोप में पगी संविधान पर विशेष चर्चा को संविधान निर्माता बाबा साहब अंबेडकर द्वारा संविधान सभा की अंतिम बैठक में दिए भाषण के आलोक में देखना होगा। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि संविधान का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि उस पर अमल करने वाले लोग कैसे होंगे। संसद में हुई रस्मी बहस में भी इस संदर्भ में कोई बात नहीं हुई कि हमे संविधान के आलोक में देश को किस दिशा में और कैसे ले जाना है। अपनी कमीज प्रतिद्वंद्वी के मुकाबले ज्यादा उजली होने की मुग्धता भविष्य के प्रति बहुत आश्वस्त नहीं करती।

व्याख्यान के जरिए फ्लोरोसिस के खतरों के प्रति किया जागरूक

झाबुआ ब्लॉक में फ्लोराइड की मात्रा की जानकारी दी

झाबुआ। शासकीय कन्या महाविद्यालय में फ्लोराइड और फ्लोरोसिस विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान रसायन शास्त्र विभाग में आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता पीएम श्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस शहीद चंद्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रसायन शास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ सुनील कुमार सिकरवार थे।

प्रारंभ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ दिनेश कटारा और मुख्य अतिथि ने मां सरस्वती की पूजा एवं दीप प्रज्वलित कर व्याख्यान का शुभारंभ किया। शासकीय कन्या महाविद्यालय रसायन विभाग की डॉ रिद्धि माहेश्वरी ने डॉ सिकरवार का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। प्राचार्य डॉ कटारा ने शुभारंभ करते हुए कहा कि हमारा झाबुआ जिला फ्लोराइड की समस्या से ग्रस्त है। यह व्याख्यान स्वच्छ जल के प्रति जागरूकता व जन जागरण का कार्य करेगा।

मुख्य वक्ता सिकरवार ने अपने व्याख्यान में बताया कि फ्लोरोसिस दो प्रकार का होता है तथा जल में इसकी कितनी मात्रा हानिकारक होती है। आपने बताया कि पीएचई विभाग विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में हैंडपंपों पर लाल पीला व हरा रंग का पट्टा बनाया है। लाल पीने योग्य नहीं है, पीला कार्य में उपयोग के लिए तथा हरा पीने योग्य पानी है। आपके द्वारा झाबुआ जिले के अलग-अलग ब्लॉक में फ्लोराइड की मात्रा की भी जानकारी दी गई। व्याख्यान के अंत में फ्लोराइड की मात्रा को नियंत्रित करने के तरीकों की भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डॉ बीएस बघेल, डॉ लोकेंद्र सिंह झाला, डॉ प्रियंका भालिया सहित महाविद्यालय स्टाफ तथा बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में आभार डॉ प्रीति समदरिया ने माना।

बैडमिंटन खेल रहे जज को आया हार्ट अटैक, मौत

छिंदवाड़ा में सीने में दर्द के बाद जमीन पर गिरे सीपीआर दिया, फिर भी नहीं बची जान

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा में बैडमिंटन खेलते समय जज मोहित दीवान को हार्ट अटैक आ गया। जिससे उनकी मौत हो गई। ये घटना सोमवार सुबह की है। प्रारंभिक जानकारी अनुसार, विशेष न्यायाधीश मोहित दीवान रोज की तरह सोमवार सुबह भी सतपुड़ा क्लब में बैडमिंटन खेलने गए थे। इस दौरान अचानक उनके सीने में तेज दर्द

मोहित दीवान, विशेष न्यायाधीश

होने लगा। वे जमीन पर गिर पड़े। वहां मौजूद लोग उन्हें एंबुलेंस की मदद से निजी अस्पताल ले गए। यहां डॉक्टर्स की टीम ने उन्हें सीपीआर भी दिया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका।

छिंदवाड़ा में तापमान में लगातार गिरावट हो रही- बता दें कि उत्तर भारत में बर्फबारी की वजह छिंदवाड़ा में भी तापमान में लगातार गिरावट दर्ज हो रही है। सोमवार सुबह जिले के ग्रामीण क्षेत्र में 3.7 डिग्री और शहरी क्षेत्रों में 6.9 डिग्री दर्ज तापमान रिकॉर्ड हुआ। चिकित्सक डॉ. जी.एस. दुबेगांव ने कहा कि ठंड में शरीर समेत हार्ट की नस सिकुड़ जाती हैं, ऐसे में ब्लॉकेज होने पर कार्डियक अरेस्ट की आशंका बढ़ जाती है। कम उम्र के लोगों को हार्ट अटैक से पहले कोई भी सिमटम्प्स दिखाई नहीं देते है। 35 से ज्यादा उम्र वालों को नियमित बीपी, शुगर संबंधी नियमित जांच करवाना चाहिए और एक्सरसाइज या खेलकूद से पहले बॉडी को वार्मअप करना चाहिए। शीतलहर से बढ़ती ठंड में तापमान बढ़ने के बाद ही सुबह घूमने जाना जाना चाहिए।

58 साल बाद भोपाल में रात का पारा 3.3 डिग्री

0.3 डिग्री और लुढ़का तो टूटेगा ओवरऑल रिकॉर्ड

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ठंड का 58 साल का रिकॉर्ड टूट गया है। वर्ष 1966 के बाद रविवार-सोमवार की रात में भोपाल में टेम्प्रेचर 3.3 डिग्री रहा। अब पारा 0.3 डिग्री लुढ़का तो ओवरऑल रिकॉर्ड टूट जाएगा। मौसम विभाग ने आज, शीतलहर चलने का अलर्ट जारी किया है। आज 37 जिलों में शीतलहर, 9 जिलों में जम सकती है बर्फ; ग्वालियर में स्कूलों का समय बदला गया है।

भोपाल में दिसंबर में दिन-रात ठंड और बारिश का ट्रेंड रहा है। 10 में से पिछले 5 साल से भोपाल दिसंबर में भीग रहा है। आधा से पौन इंच तक बारिश हो गई।

हालांकि, इस बार बारिश नहीं हुई, लेकिन लगातार सात दिन से शीतलहर और कोल्ड डे (ठंडा दिन) जैसी स्थिति है। वहीं, रात के पारे में जबरदस्त गिरा हुई है।

मौसम विभाग के अनुसार, दिसंबर में ठंड की बात करें तो 11 दिसंबर 1966 की रात में पारा 3.1 डिग्री पहुंच गया था। यह अब तक का ओवरऑल रिकॉर्ड है। 3 साल पहले 2021 में पारा 3.4 डिग्री पहुंच चुका है, लेकिन रविवार-सोमवार की रात में यह 3.3 डिग्री दर्ज किया गया। यानी, पिछले 10 साल में तो पारा सबसे कम रहा ही, साथ में ओवरऑल रिकॉर्ड के करीब भी है।

इस वजह से ठंड का असर बढ़ा- भोपाल में पिछले 7 दिन से शीतलहर का असर है। वहीं, कोल्ड डे की स्थिति भी है। बर्फीली हवा के असर से कड़ाके की ठंड पड़ रही है। इसके चलते ही दिसंबर का रिकॉर्ड भी टूटा है। मौसम विभाग ने आज भी शीतलहर का अलर्ट जारी किया है। सुबह से ही सर्द हवाएं चल रही है।

जानवरों को ठंड से बचाने वन विहार में लगे हीटर- वन विहार नेशनल पार्क में जानवरों को ठंड से बचाने के लिए हीटर लगाए गए हैं। डिप्टी डायरेक्टर एसके सिन्हा ने बताया, जानवरों के हाउस में हीटर लगाने के साथ ही खिड़कियों को बंद किया गया है।

इन जिलों में कड़ाके की ठंड का अलर्ट

इंदौर में बीते 24 घंटे में दिन के तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस का इजाफा हुआ। यहां दिन का पारा 26.7 जबकि रात का तापमान 9.6 डिग्री सेल्सियस रहा। सोमवार सुबह से मौसम साफ है। हालांकि, सर्द हवाएं चल रही हैं।

- जबलपुर में शीत लहर के चलते न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने यहां सीवियर कोल्ड वेव की चेतावनी दी है।
- शाजापुर, आगर-मालवा, राजगढ़, सीहोर, रायसेन, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर और मंडला में ऑरेंज और यलो अलर्ट है। यहां बर्फ जम सकती है।
- भोपाल में बीती रात का पारा 3.3 डिग्री दर्ज किया गया। भोपाल और जबलपुर में शीतलहर का ऑरेंज अलर्ट है। वहीं, नीमच, मंदसौर, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, खंडवा, देवास, शिवपुरी, मुरैना, भिंड, छतरपुर, पन्ना, सतना, सिंगरौली, कटनी, डिंडौरी, पांढुर्णा, सिवनी और बालाघाट में शीतलहर का यलो अलर्ट है।
- हरदा, मऊगंज में शीतलहर और ठंडा दिन रह सकता है।
- नरसिंहपुर में कोल्ड डे यानी, ठंडा दिन रहने का अनुमान है।

एमपी में सरकारी कर्मचारियों की बनेगी समग्र आईडी

वेतन-भत्तों से जुड़ेगी आईडी ; वित्त के निर्देश-एंट्री कर वैरिफिकेशन करना होगा

भोपाल (नप्र)। एमपी सरकार के कर्मचारियों के वेतन-भत्तों को समग्र आईडी से जोड़ने की तैयारी की जा रही है। वित्त विभाग ने कहा है कि प्रदेश के हर कर्मचारी और अधिकारियों का डेटा समग्र आईडी से इंटीग्रेट होना चाहिए। इस काम को फरवरी 2025 तक पूरा करने का टारगेट है।

वित्त विभाग के अपने निर्देश में स्पष्ट किया कि समग्र आईडी को कर्मचारियों के वेतन वाले बैंक खातों से भी जोड़ा जाएगा। सभी सरकारी अधिकारी-कर्मचारियों के डेटा का सत्यापन इंटीग्रेटेड फाइनेंशियल मैनेजमेंट इंफॉर्मेशन सिस्टम के तहत समग्र आईडी से किया जाएगा। आने वाले समय में शासकीय सेवकों का वेतन भुगतान आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम (एईपीएस) के माध्यम से होगा। वित्त विभाग ने आईएफएमएस में समग्र आईडी की एंट्री सुविधा प्रारंभ कर दी है। सभी शासकीय सेवकों को IFMS के अंतर्गत एम्प्लाई सेल्फ सर्विस प्रोफाइल से समग्र की एंट्री कर वैरिफिकेशन करना होगा।

नियमित के बाद संविदा, मानदेय, दैवेभो की भी बनेगी आईडी- कर्मचारियों के डेटा के समग्र आईडी से सत्यापन के पहले चरण में नियमित शासकीय सेवकों के लिए समग्र आईडी की एंट्री की कार्यवाही की जाना है। दूसरे चरण में मानदेय, संविदा, दैनिक वेतनभोगी शासकीय सेवकों का भी सत्यापन एवं आधार से लिंक किया जाएगा। समग्र पोर्टल से संबंधित सहयोग, सहायता के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

नाम के कलेक्टर-एसपी, बजट न दफ्तर

प्रदेश की भाजपा सरकार ने चुनावी फायदे के लिए भले ही छोटे छोटे जिलों का सृजन कर दिया है लेकिन छोटे जिलों में कलेक्टर-एसपी शो-पीस बन गये हैं जिनके पास ना तो ढंग का ऑफिस है और ना बजट। कलेक्टर चाह कर भी किसी गरीब की मदद नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि ना तो बजट है ना रेट क्रॉस में निधि। हम बात कर रहे हैं नए बने जिले पांढुर्णा, मैहर और मऊगंज जिलों की, जहां पर कलेक्टर-एसपी तो सरकार ने तैनात कर दिए हैं लेकिन कलेक्टर-एसपी को अपने दैनिक कामकाज निपटने के लिए पूर्ववर्ती जिलों के अधिकारियों पर निर्भर रहना पड़ता है। नए बने इन जिलों में एक-दुक्का विभाग के ही अधिकारी पदस्थ किये गये हैं। ऐसे में सबसे ज्यादा दिक्कत कलेक्टर्स को हो रही है। मसलन यदि कलेक्टर्स को पिछड़ा वर्ग कल्याण या महिला बाल विकास से संबंधित विषयों पर विभाग के अफसर से चर्चा करना है तो किस से चर्चा करें? एसे में नए जिलों के कलेक्टर्स, पूर्ववर्ती जिलों के विभागीय अफसरों से चर्चा के लिए समय मांगते हैं। क्योंकि पूर्ववर्ती जिले के कलेक्टर अपने अधिकारियों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। ऐसी स्थिति में अजीब हालात पैदा होते हैं। नई जिलो के पास बजट भी नहीं है कलेक्टर किराये की गाड़ियों के बिल चुका नहीं पा रहे हैं। दफ्तरों की हालत तो बहुत खराब है। कलेक्टर के पास रेड क्रॉस निधि में पैसा ही नहीं है। कलेक्टर्स ने अपनी पीड़ा उच्च स्तर पर पहुंचा दी है। बता दे की 6 साल पहले जिला बना निवाड़ी के भी हालत इसी तरह के हैं।

मोहन का मंत्रालय

कुमार आशीष

स्कूली शिक्षा में सुधार के लिए अब सिंगापुर की यात्रा!

करीब पौने 3 लाख करोड़ के कर्जे में डूबी राज्य सरकार के 120 अधिकारियों का एक दल अगले महीने विदेश यात्रा पर जाने वाला है। लाखों रुपए खर्च कर विदेश यात्रा के लिए मंत्री के समर्थक से लेकर विभाग अधिकारी तक इस मौके का लाभ उठाना चाहते हैं और आखिरी वक्त तक जोर आजमाइश में लगे हुए हैं। स्कूल शिक्षा विभाग के 120 अधिकारियों का लाव लश्कर अगले महीने सिंगापुर जाने वाला है। अधिकारियों का दल दो चरणों में सिंगापुर की यात्रा पर रहेगा। इस दौरान अधिकारियों का दल सिंगापुर के स्कूलों का जायजा लेगा और स्कूली शिक्षा-दीक्षा के पाठ्यक्रमों को समझेगा। अधिकारियों की यात्रा का उद्देश्य मध्य प्रदेश के प्राइमरी स्तर से लेकर हायर सेकेंडरी तक स्कूलों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और बदलाव का है। करीब एक सप्ताह के इस दौरे में विभाग के आला अधिकारियों से लेकर जिलों के अधिकारी तक शामिल हैं। सिंगापुर यात्रा के लिए मुख्यमंत्री स्तर से अनुमति मिल गई है। लेकिन कुछ अधिकारी अभी भी मंत्री स्तर से यात्रा के लिए नाम जुड़वाने का प्रयास कर रहे हैं। बता दें कि सीएम राइजिंग स्कूल, विभाग के अधिकारियों की दक्षिण कोरिया की यात्रा से निकला हुआ नवाचार है।

सरकार की संवेदनशीलता

प्रदेश और देश की विभिन्न अदालतों में चल रहे मध्य प्रदेश राज्य के कर्मचारियों-अधिकारियों के प्रकरणों को लेकर सामान्य प्रशासन विभाग में एक बार फिर विभागों को नसीयत हैं। नसीहत में राज्य सरकार का संवेदनशील रवैया भी सामने आया है। राज्य शासन ने विभागों से स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि न्यायालयीन प्रकरणों में मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव व सचिव जैसे आला अधिकारी पक्षकार है या बनाया गया है, तो संबंधित विभाग के जिम्मेदार अधिकारी न्यायालय में प्रभावी पक्ष रख कर प्रकरणों से आला अधिकारियों के नाम हटवाये या व्यक्तिगत रुप से न्यायालयों में उपस्थित से छूट रहे। राज्य शासन ने यह भी स्पष्ट किया है कि न्यायालयीन प्रकरणों में अवमानना की स्थिति ना बने इसके लिए अधिकारी समय पर जवाब दावा प्रस्तुत करें और न्यायालय के प्रकरण को लेकर संजिदगी दिखाएं। राज्य शासन ने यह भी कहा कि सेवानिवृत कर्मचारियों और अधिकारियों के मामले में अनावश्यक न्यायालय प्रकरणों में ना उलझे और जहां तक संभव हो नियमों की परिधि में सेवानिवृत अधिकारी और कर्मचारियों के मामले में संवेदनशील रवैया अपनाए और सेवानिवृत अधिकारी व कर्मचारियों के न्यायालयीन प्रकरणों का सहानुभूति पूर्वक निराकरण करें।

सीएस की बैठक, आलाधिकारी सजग

मुख्य सचिव अनुराग जैन की बैठकों को लेकर अब मंत्रालय में पदस्थ आला अधिकारी भी बेहद सजग हो गए हैं। मुख्य सचिव बैठको में संबंधित विभाग के विषयों पर बारीक से बारीक जानकारी पूछ लेते हैं और उसको लेकर निर्देश भी देते हैं। यही वजह है की मुख्य सचिव की मैराथन बैठकों में आला अधिकारी पूरी तैयारी के साथ जाने लगे हैं। उन्हें यह डर भी सताने लगता है की मुख्य सचिव बैठक में कब कौन सा सवाल जवाब कर लें या नसीहत दे दें। पिछले दिनों महत्वपूर्ण विभाग की बैठक में एक आईएएस अधिकारी पर्याप्त तैयारी के साथ नहीं पहुंचे तो सीएस ने बैठक के दौरान ही कह दिया काम न करने वाले कलेक्ट्री का ख्वाब छोड़ दें।

ओएसडी रेलवे

मुख्यमंत्री सचिवालय में अब एक और विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (ओएसडी) रेल्वे का पद जल्द ही क्रिएट होने वाला है। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप इसके लिए किसी विशेषज्ञ अधिकारी को पदस्थ किया जाएगा। रेलवे ओएसडी प्रदेश में चल रही रेल परियोजनाओं को जल्द से जल्द पूरी करने के लिए संबंधित विभागों में कोऑर्डिनेशन का काम करेगा। ओएसडी, प्रदेश सरकार के विभागों से और केंद्रीय मंत्रालय कोऑर्डिनेटर कर रेल परियोजनाओं को पर्यावरणीय स्वीकृति दिलाने में सहायता करेगा। बता दे कि मध्य प्रदेश में एक रेल परियोजना बीते एक दशक से भी अधिक समय से पर्यावरण मंजूरी के लिए अटकी पड़ी थी और उसमें गति आने की उम्मीद है।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने पद्मश्री पुरस्कृत जोधइया बाई के निधन पर व्यक्त किया शोक

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने उमरिया जिले के ग्राम लोधा की सुप्रसिद्ध बैगा चित्रकार पद्मश्री जोधइया बाई के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पद्मश्री जोधइया बाई ने अपनी अद्वितीय कला और कौशल से न केवल बैगा जनजातीय संस्कृति को संरक्षित किया, बल्कि उसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उनकी कलाकृतियां भारतीय परंपराओं, जनजातीय जीवन और सांस्कृतिक धरोहर का जीवंत उदाहरण हैं, जिनके माध्यम से उन्होंने दुनिया को जनजातीय जीवन का अनूठा दर्शन कराया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पद्मश्री जोधइया बाई का योगदान हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करने में मील का पत्थर साबित हुआ है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। उनकी इस अप्रतिम यात्रा और योगदान को सदैव स्मरण किया जाएगा। उन्होंने दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने और शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

प्रसिद्ध तबला वादक और पद्म विभूषण सम्मानित उस्ताद जाकिर हुसैन के निधन पर उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने व्यक्त किया शोक

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रसिद्ध तबला वादक और पद्म विभूषण से सम्मानित उस्ताद जाकिर हुसैन के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह संगीत और कला जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि उस्ताद जाकिर हुसैन ने अपनी अद्वितीय प्रतिभा और साधना से भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उनकी तबला वादन शैली, गहन संगीत समझ और साधना ने उन्हें विश्व स्तर पर एक अमिट पहचान दिलाई। ऐसी महान विभूति के जाने से संगीत और कला जगत में एक बड़ा रिक्त स्थान उत्पन्न हुआ है, जिसे भर पाना असंभव है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की है और उनके परिवार, प्रशंसकों एवं शिष्यों को इस अपार कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। उन्होंने कहा कि उस्ताद जाकिर हुसैन की कला और विरासत सदैव प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

भोपाल मण्डल पर पेंशन अदालत का आयोजन

भोपाल। पश्चिम मध्य रेल, भोपाल मंडल द्वारा पेंशनर्स की समस्याओं के समाधान के लिए 2024 की द्वितीय पेंशन अदालत का आयोजन आज, 16 दिसंबर 2024 को सभा कक्ष 'संकल्प' में किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी ने की। पेंशन अदालत में कुल 35 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 30 आवेदनों का तुरंत निराकरण किया गया, जबकि शेष 5 आवेदनों का निराकरण जल्द ही किए जाने का आश्वासन दिया गया। आज आयोजित पेंशन अदालत में रुपये 2,64,284/- का भुगतान किया गया, जिसे सीधे पेंशनरों के खाते में जमा किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी ने उपस्थित पेंशनर्स को संबोधित करते हुए उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के त्वरित समाधान के निर्देश दिए। उन्होंने पेंशन अदालत को पेंशनर्स और प्रशासन के बीच संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम बताया।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती रश्मि दिवाकर, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री विजय सिंह, वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक श्रीमती एकता अरोरा, सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण) श्री एम. एस. यादव, सेवानिवृत्त पेंशन संगठन के पदाधिकारी, और कार्मिक एवं लेखा विभाग के पर्यवेक्षक कर्मचारी उपस्थित रहे।

पेंशन अदालत ने न केवल पेंशनर्स की समस्याओं के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि रेलवे प्रशासन की अपने पेंशनर्स के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शाया।

डीआरएम ट्रॉफी-2024

डीजल शेड इटारसी ने फाइनल जीतकर रचा इतिहास

भोपाल। भोपाल मंडल के डिवीजनल स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित डीआरएम ट्रॉफी-2024 इंटर डिपार्टमेंटल क्रिकेट टूर्नामेंट का समापन 15 दिसंबर 2024 को हबीबगंज क्रिकेट ग्राउंड पर हुआ। इस टूर्नामेंट में 16 टीमों ने हिस्सा लिया। फाइनल मुकाबला पर्सनल एलेवन और डीजल शेड इटारसी के बीच खेला गया, जिसमें डीजल शेड इटारसी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 9 विकेट से जीत दर्ज कर डीआरएम ट्रॉफी-2024 का खिताब अपने नाम किया।

फाइनल मैच का स्कोर

- पर्सनल इलेवनः 109 रन
- डीजल शेड इटारसीः 110 रन (1 विकेट के नुकसान पर)

मुख्य पुरस्कार

- मैन ऑफ द मैचः धर्मेंद्र (डीजल शेड इटारसी)
- सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजः शुभम राय (पर्सनल इलेवन) 102 रन
- सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजः हर्षित (डीजल शेड इटारसी) 13 विकेट
- मैन ऑफ द सीरीजः धर्मेंद्र (डीजल शेड इटारसी) 83 रन और 6 विकेट

समापन और पुरस्कार वितरण समारोह

समापन समारोह में मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी ने विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान की और सभी खिलाड़ियों को उनकी उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने इस आयोजन को रेलवे कर्मचारियों के लिए प्रेरणादायक बताते हुए भविष्य में ऐसे आयोजन जारी रखने की बात कही।

मंडल रेल प्रबंधक ने टूर्नामेंट के सफल आयोजन के लिए डिवीजनल स्पोर्ट्स एसोसिएशन की सराहना की और रेलवे कर्मचारियों को इस तरह के आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम न केवल खिलाड़ियों को मंच प्रदान करते हैं बल्कि कर्मचारियों के बीच स्वास्थ्य और टीम भावना को भी बढ़ावा देते हैं।

इस अवसर पर मंडल खेल अधिकारी श्री प्रशांत यादव (वरिष्ठ कमांडेंट, आरपीएफ), एडीआरएम रश्मि दिवाकर, और कई अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही, डिवीजनल स्पोर्ट्स एसोसिएशन के पदाधिकारी प्रदीप याज्ञनिक (सेक्रेटरी स्पोर्ट्स), सनी भटनागर (ज्वाइंट सेक्रेटरी क्रिकेट), अखलाक अहमद (ज्वाइंट सेक्रेटरी हॉकी), नीरज शर्मा, जितेंद्र असनानी, और अंकित श्रीवास्तव ने आयोजन में सक्रिय भागीदारी निभाई।

कार्यक्रम के अंत में मंडल खेल अधिकारी ने सभी उपस्थित अधिकारियों, खिलाड़ियों और आयोजन समिति का आभार व्यक्त करते हुए टूर्नामेंट की सफलता के लिए स्पोर्ट्स एसोसिएशन के योगदान की प्रशंसा की।

चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त कर रहे म.प्र. के 648 छात्रों में से 183 छात्रों को मिला प्रमुख ब्रांडों में प्लेसमेंट, 32 छात्रों को मिले नौकरियों के प्रस्ताव

सालाना 210 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान कर आर्थिक रूप से कमज़ोर मेधावी छात्रों की कर रही मदद

भोपाल। देश की सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी से उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त कर एक सफल भविष्य का निर्माण हर एक छात्र का सपना होता है, लेकिन कई बार आर्थिक कठिनाइयों के कारण कई छात्र अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते। ऐसे ही हज़ारों होनहार एवं आर्थिक रूप से कमज़ोर छात्रों के शिक्षा के सपने को साकार करने के लिए चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी कॉमन एंट्रेंस टेस्ट 2025 (सीयूसीईटी 2025) के माध्यम 210 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान करेगी, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर एवं उत्कृष्ट पहुँच से दूर छात्रों को अपने सपनों को पूरा करने का अवसर मिल सके। इसकी जानकारी चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के चांसलर के सलाहकार प्रोफेसर (डॉ) आर एस बावा ने भोपाल, मध्य प्रदेश में एक पत्रकार सम्मेलन में मीडिया को सम्बोधित करते हुए दी।

मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए प्रोफ़ेसर (डॉ) आर एस बावा ने कहा, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी सर्वश्रेष्ठ शिक्षा संस्थान के रूप में जानी जाती है। सीयूसीईटी चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी द्वारा एक अग्रणी पहल है जो आर्थिक रूप से वंचित मेधावी छात्रों को एक सुनेहरा अवसर प्रदान करती है कि वे अपने शैक्षणिक सपनों को साकार करने में सक्षम बन सके। चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी कॉमन एंट्रेंस टेस्ट में, छात्र चंडीगढ़ कैंपस में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए 100 प्रतिशत छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी हर साल छात्रवृत्ति के लिए कुल 210 करोड़ रुपये का बजट आवंटित करती है , जिसमें चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली कैंपस के लिए 170 करोड़ और चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, लखनऊ कैंपस के लिए 40 करोड़ रुपये शामिल हैं। छात्रवृत्ति कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से वंचित प्रतिभाशाली छात्रों को पुरस्कृत करना है ताकि वे छात्रवृत्ति का लाभ उठा कर चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी अपने पसंदीदा पाठ्यक्रमों का चुनाव क्र शिक्षा प्राप्त कर सके। इच्छुक छात्र चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर जाकर आसानी से आवेदन कर सकते हैं।

चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली द्वारा 2012 में अपनी स्थापना के बाद से अब तक 1.30 लाख छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सीयू द्वारा छात्रवृत्ति के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जा चुकी है। पिछले 5 वर्षों में, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी ने 53,145 छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की है। देश के अन्य सभी क्षेत्रों और यहां तक कि विदेशों के छात्र भी लखनऊ (एससीआर) में नए कैंपस (हाल ही में लॉन्च) में भी छात्रवृत्ति का लाभ उठा सकते हैं।

वर्ल्ड रैंकिंग में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रदर्शन के विषय में बोलते हुए प्रोफ़ेसर (डॉ) आर एस बावा ने कहा, क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 में, जिसमें हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी , कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी और इंपीरियल कॉलेज ऑफ लंदन जैसे वैश्विक दिग्गज संस्थान शामिल थे, में104 विदेशी स्थानों के 1,500 संस्थानों में से, शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक अग्रणी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करते हुए, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी ने शीर्ष राष्ट्रीय संस्थानों की रैंक पर पर आगे बढ़ते हुए शानदार प्रदर्शन किया है,सीयू के छात्रों को विभिन्न धाराओं में कुल 9124 नौकरी के प्रस्ताव मिले, जिससे कई छात्रों को अपने सपनों की नौकरी मिल सकी। इस साल, एक छात्र ने 1.74 करोड़ रुपये का वेतन पैकेज हासिल किया, जो बैच के लिए उच्चतम वार्षिक पैकेज है। इस बीच, उच्चतम घरेलू वेतन पैकेज 54.75 लाख रुपये था। इस के साथ 31 से अधिक भर्तीकर्ताओं ने 20 लाख या उससे अधिक की राशि की नौकरी की पेशकश की, जबकि 52 कंपनियों ने 15 लाख रुपये से अधिक वार्षिक वेतन पैकेज के अवसर प्रदान किए।

प्रोफ़ेसर (डॉ) आर एस बावा ने कहा, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लेने वाले कुल 648 छात्रों में से, मध्य प्रदेश के 183 छात्रों, जिनमें भोपाल के 10 छात्र शामिल हैं, ने चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी में अपनी उच्च शिक्षा पूरी की है, तथा 2024 में प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडों में प्लेसमेंट हासिल किया है। यही नहीं 32 छात्रों को प्रमुख ब्रांडों में कई नौकरियों के प्रस्ताव मिले हैं।

रीवा मध्य प्रदेश के निवासी ऋतिक पटेल, जिन्होंने चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी में यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग (यूआईई) से बीई/बीटेक-सीएसई पूरा किया, को म्यू सिग्मा बिजनेस सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड, कॉग्निजेंट टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज से तीन जॉब ऑफर मिले हैं। इसी तरह, मध्य प्रदेश के सीधी निवासी आकाश तिवारी, जिन्होंने सीयू में यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग (यूआईई) से बीई/बीटेक-सीएसई पूरा किया, को केपीआईटी टेक्नोलॉजीज लिमिटेड और टेक महिंद्रा लिमिटेड से दो जॉब ऑफर मिले। भोपाल की निवासी आर्या शर्मा, जिन्होंने सीयू में यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग (यूआईई) से बीई/बीटेक-सीएसई पूरा किया, को डब्ल्यूएनएस ग्लोबल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड और कैपजेमिनी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से दो जॉब ऑफर मिले।

भोपाल के अन्य छात्र जिन्हें शीर्ष ब्रांडों से नौकरी के प्रस्ताव मिले हैं उनमें बी.ए. एलएलबी - इंटीग्रेटेड की छात्रा भावना रोहिल्ला, यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग (यूआईई) से बीई/बीटेक- ऑटोमोबाइल छात्र विभोर सुचारी, एपेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एआईटी) से बीई/बीटेक-सीएसई (क्लाउड कंप्यूटिंग) के छात्र मिलिंद पाल सिंह तंवर, यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज (यूआईपीएस) से एम फार्मेसी (इंडस्ट्रियल फार्मेसी) के छात्र लोकेश धोटे शामिल हैं।

देवी अहिल्या बाई होल्कर को पढ़ने के साथ उन पर शोध की भी आवश्यकता है : श्रीराम अरावकर

निखिलेश महेश्वरी की पुस्तक 'राष्ट्र सेविका मां अहिल्या बाई होल्कर' का विमोचन

भोपाल (नप्र)। देवी अहिल्याबाई के विचारों को पढ़ने, उन्हें आत्मसात करने के साथ ही लोकमाता के विषय में और अधिक शोध की आवश्यकता है। उनके विषय में ज़्यादा से ज़्यादा पुस्तकें एवं साहित्य का लोकव्यापीकरण करने की आवश्यकता है। यह बात विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री श्रीराम अरावकर ने कही। वे रविवार को रवींद्र भवन के गौरांजनी सभागार में विद्याभारती के मध्य भारत प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री श्री निखिलेश महेश्वरी की पुस्तक 'राष्ट्र सेविका मां अहिल्या बाई होल्कर' के विमोचन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अपने को अनाम रखते हुए भी लोक हित के कार्य करने में देवी बड़ी उदाहरण एवं प्रेरणा हैं।

समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक श्री अशोक पाण्डेय ने की। सारस्वत अतिथि के रूप में स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री राव उदय प्रताप सिंह एवं राज्य सूचना आयुक्त डॉ वंदना गांधी विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंच पर उपस्थित अतिथियों ने श्री निखिलेश महेश्वरी की पुस्तक 'राष्ट्र सेविका माँ अहिल्याबाई होल्कर' का विमोचन किया।

श्री अरावकर ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि देवी के लिए भाई ने कभी स्वयं को शासिका नहीं माना बल्कि सदैव प्रजा के विषय में सोचा इसीलिए उन्हें पुण्य श्लोका कहा गया है वे लोगों की चिंता माता के समान कर दी थी इसके लिए उन्हें लोग माता का दर्जा दिया गया। व्यक्तिगत संकटों का दृढ़ता से मुक़ाबला करते हुए पूरे भारत में उन्होंने धर्म संस्कृति के लिए कार्य किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक श्री अशोक पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि देवी अहिल्या बाई ने महेश्वर से पूरे देश का सांस्कृतिक नेतृत्व किया। बांग्लादेश, पाकिस्तान जैसे दृश्य हमारे पूर्वजों ने सन् 792 से लेकर 1947 तक देखे हैं। हिंदुओं पर जघन्य अत्याचारों की परिस्थिति में देवी ने शासन का कुशलतापूर्वक नेतृत्व करते हुए धर्म संस्कृति का संरक्षण किया। उनका व्यक्तित्व विराट है। उन्होंने देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

कार्यक्रम की सारस्वत अतिथि डॉ वंदना गांधी ने कहा कि अपने देश में महापुरुषों की एक लंबी श्रृंखला है। त्रिशताब्दी वर्ष के सुअवसर में हम देवी अहिल्याबाई को याद कर रहे हैं। उनके कार्य हम सभी के लिए प्रेरणादायी है। लेकिन दुख का विषय है कि इतने प्रेरणादायी व्यक्तित्व को भी इतिहास में उचित उचित स्थान नहीं दिया गया। अहिल्या बाई ने राष्ट्र प्रथम कंधे रखकर कार्य किया उन्होंने पूरे राष्ट्र में लोगों के हित के लिए निर्माण कार्य कराए। उन्होंने नारी सशक्तिकरण के लिए विशेष कार्य किये थे। पुस्तक में उनके विषय में सहज भाषा में प्रवाहमान तरीक़े से वर्णन किया गया है।

इस अवसर पर सारस्वत अतिथि के रूप में स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री राव उदय प्रताप सिंह ने कहा कि लेखक की लेखनी चिरस्थायी रहती है और आने वाली पीढ़ियों को दिशा प्रदान करती है। हमारे पाठ्यक्रमों में देवी अहिल्याबाई जैसे महापुरुषों को उचित स्थान मिले इसके प्रयास किए जा रहे हैं । उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति जिस दिन पूरी तरह से लागू हो जाएगी सैकड़ों वर्षों का संघर्ष आसान हो जाएगा। सशक्त भारत की कल्पना को हम भारत केंद्रित पाठ्यक्रम एवं विचार के माध्यम से ही पूरा कर सकते हैं।

पुस्तक के लेखक श्री निखिलेश महेश्वरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्कूल कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में देवी अहिल्याबाई के विषय में नहीं पढ़ाया गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को नई पीढ़ी के सामने लाने के उद्देश्य से ही मैंने इस पुस्तक लेखन का प्रयास किया है।

लोक माता ने सुशासन, न्याय, रक्षा, अर्थव्यवस्था, लोकहित के साथ साथ धर्म एवं संस्कृति के मूल्यों के लिए अभूतपूर्व कार्य किया। वे राष्ट्र की सच्ची सेविका हैं। प्रसिद्धि से पूरी तरह दूर रह कर उन्होंने धर्म एवं संस्कृति के आधार पर भारत को एकात्मता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया। अतिथि परिचय ग्राम भारती के प्रांत प्रमुख श्री चंद्रहंस पाठक ने कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ शिरोमणि दुबे ने किया। आभार श्री हरीश शर्मा ने व्यक्त किया। अंत में वंदेमातरम गीत का गायन श्री अनंत संत द्वारा किया गया।

यात्रियों को राहत

यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप बना समय और संसाधन बचाने का सरल साधन

भोपाल। भोपाल मंडल में अनारक्षित टिकट खरीदने की प्रक्रिया को सरल और तेज़ बनाने के लिए यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप यात्रियों के लिए एक वरदान साबित हो रहा है। लगातार जागरूकता अभियानों और डिजिटल सेवाओं को बढ़ावा देने के प्रयासों के कारण, यह ऐप यात्रियों के बीच लोकप्रिय हो रहा है।

यात्रियों के लिए लाभदायक साबित हो रहा है मोबाइल टिकटिंग ऐप - नवंबर 2024 के दौरान, भोपाल मंडल में 2,86,015 यात्रियों ने यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप का उपयोग कर टिकट बुक किया। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि यात्रियों को रेलवे स्टेशनों पर अनारक्षित टिकट काउंटर की लंबी कतारों से छुटकारा मिला, साथ ही समय और संसाधनों की बचत हुई।

मुख्य लाभ

1. कतारों से छुटकाराःअब यात्रियों को टिकट खरीदने के लिए काउंटर पर लंबा इंतजार नहीं करना पड़ता।
2. समय की बचतः किसी भी समय, कहीं से भी टिकट बुक करें।
3. कागज की बचतः पर्यावरण हितैषी पेपरलेस टिकटिंग का अनुभव।
4. कैशलेस लेनदेनः डिजिटल भुगतान के माध्यम से टिकट बुक करना आसान।
5. ऑफलाइन टिकट दिखाने की सुविधाः मोबाइल नेटवर्क की अनुपलब्धता में भी टिकट मान्य।

यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप-एक आसान और सुरक्षित समाधान- वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया ने कहा, अनारक्षित टिकट यात्रियों को समय की बचत और तनावमुक्त यात्रा का अनुभव देने के लिए यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप बेहद लाभकारी है। उन्होंने यात्रियों से अपील की कि वे इस डिजिटल सुविधा का अधिकतम लाभ उठाएं और समय के साथ कदम मिलाते हुए कागज रहित और सरल टिकटिंग प्रक्रिया अपनाएं।

भोपाल मंडल के सभी रेलवे स्टेशनों पर यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप की सुविधा उपलब्ध है। यह यात्रियों को हर स्टेशन पर अनारक्षित टिकटिंग का तेज़ और भरोसेमंद विकल्प प्रदान करता है।

कैसे करें ऐप का उपयोग?

1. ऐप डाउनलोड करेंः गूगल प्ले स्टोर, विंडोज स्टोर, या एप्पल स्टोर से ऐप डाउनलोड करें (नाम-यूटीएस)।
2. रजिस्ट्रेशनः मोबाइल नंबर से साइन अप करें।
3. टिकट बुकिंगः

- लॉगिन करें और आर-वालेट का उपयोग करके टिकट बुक करें।
- आर-वालेट रिचार्ज पर रेलवे द्वारा 3 प्रतिशत बोनस दिया जाता है।

एम्स भोपाल ने बोन एंड टिश्यू बैंक का उद्घाटन किया

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में, संस्थान ने अपने विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं को और सशक्त बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। संस्थान के आर्थोपेडिक्स विभाग द्वारा 'बोन एंड टिश्यू बैंक' का उद्घाटन किया गया, जो रोगियों को बेहतर इलाज और उन्नत चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने समारोह की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में सम्माननीय अतिथियों के रूप में डॉ. रजनीश जोशी (डीन, एकेडमिक्स), डॉ. शशांक पुरवार (चिकित्सा अधीक्षक), कर्नल अजीत कुमार डिप्टी डायरेक्टर (प्रशासन), और डॉ. वैशाली वंदेशकर (विभागाध्यक्ष, एनेस्थीसिया) शामिल थे। सभी ने इस पहल की सराहना की।

इस अवसर पर प्रो. सिंह ने 'बोन एंड टिश्यू बैंक' की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा, बोन बैंक का उद्घाटन एम्स भोपाल के लिए एक अहम उपलब्धि है। यह न केवल उन्नत आर्थोपेडिक इलाज को संभव बनाएगा, बल्कि जटिल सर्जरी और ट्रॉमा केयर के लिए नए द्वार खोलेगा। 'बोन बैंक' आर्थोपेडिक सर्जरी के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में कार्य करेगा। यह बोन ग्राफ्टिंग प्रक्रियाओं को सक्षम करेगा और गंभीर फ्रैक्चर, जोड़ों की समस्याओं और हड्डी की कमी के मामलों के प्रबंधन में सहायक होगा। इस सुविधा की स्थापना से न केवल मरीजों के इलाज के परिणाम बेहतर होंगे, बल्कि आर्थोपेडिक क्षेत्र में अनुसंधान को भी नया आयाम मिलेगा।

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर से उनके कक्ष में सौजन्य भेंट की। उन्होंने विधानसभा के शीतकालीन सत्र के शुभारंभ पर उनका पुष्प-गुच्छ भेंट कर अभिवादन किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश संगठन महामंत्री ने जताया शोक

भोपाल (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने प्रसिद्ध तबला वादक, पद्मश्री, पद्म भूषण एवं पद्म विभूषण से सम्मानित उस्ताद जाकिर हुसैन के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने एवं परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

अमरावती एक्सप्रेस आज-कल निरस्त रहेगी

भोपाल मंडल के इटारसी से होकर गुजरती है

भोपाल (नप्र)। मध्य रेल के नागपुर मण्डल में सिंदी रेलवे स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के चलते रेलगाड़ियाँ प्रभावित रहेगी। इस दौरान भोपाल मंडल के इटारसी स्टेशन से होकर गुजरने वाली अमरावती एक्सप्रेस को निरस्त करने का निर्णय लिया गया है।

प्रारम्भिक तिथि से निरस्त रेलगाड़ी कि जानकारी

1) दिनांक 17 दिसम्बर 2024 को प्रारंभिक स्टेशन जबलपुर से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 12160 जबलपुर - अमरावती एक्सप्रेस निरस्त रहेगी।

2) दिनांक 18 दिसम्बर 2024 को प्रारंभिक स्टेशन अमरावती से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 12159 अमरावती - जबलपुर एक्सप्रेस निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा एनटीईएस /139 से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी पता करके तदनुसार यात्रा प्रारम्भ करें।

11 दिसम्बर - 26 दिसम्बर 2024
जनकल्याण पर्व
1 वर्ष
मोहन यादव सरकार
काम लगातार-फैसले असरदार
ऐतिहासिक दिन
मध्यप्रदेश के किसानों की समृद्धि का शुरू हुआ नया अध्याय
प्रधानमंत्री
नरेन्द्र मोदी
के मुख्य आतिथ्य में
₹35000 करोड़ की
पार्वती-कालीसिंध-चंबल
नदी जोड़ो परियोजना का त्रि-स्तरीय अनुबंध
गरिमामयी उपस्थिति
मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
• परियोजना से मालवा और चंबल के 11 जिले गुना, शिवपुरी, सीहोर, देवास, राजगढ़, उज्जैन, आगर-मालवा, इंदौर, शाजापुर, मंदसौर एवं मुरैना के 2012 गांवों में 6.13 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को मिलेगी सिंचाई सुविधा
• 40 लाख परिवार होंगे लाभान्वित
• पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता के साथ औद्योगिक विकास को मिलेगी गति
मुरैना
शिवपुरी
गुना
मंदसौर
आगर
राजगढ़
उज्जैन
शाजापुर
सीहोर
इंदौर
देवास
17 दिसम्बर, 2024
पूर्वाह्न 11:00 बजे | जयपुर
#PKC_MP
D-11124/24
सीधा प्रसारण
DD News
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP